नवंबर (द्वितीय) 2021 कीमत : 12.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज खरी आवाज

J

शाप है जन्म से मिला वर्ग का ठप्पा

• 5 कहानियां • लव, सेक्स और गोली • गांजे की लत • बोली की तकरार • रजनीकांत का दोस्ताना

VISIT…

LANZAROTE Caliente.com

Piramal
TETMOSOL®
खुजली
लाल दाने
फोड़े
पपड़ी
से राहत दे
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
Monosulfiram
Prescribed by Doctors*
TETMOSOL®
DUSTING POWDER
ANTI-FUNGAL
TRIPLE SKIN BENEFITS
Fights Skin Infections
Controls Itching
Fights Prickly Heat
100 g
नया
डस्टिंग पाउडर भी उपलब्ध
डॉक्टर का सुझाया
No.1
ब्रैंड#
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
contains Monosulfiram 5% w/w
Prescribed by Doctors*
नींबू जैसी ताज़ी महक

टेटमोसॉल रोज़ लगाना, मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.

नया टेटमोसोल डस्टिंग पाउडर त्वचा के इन्फेक्शन, घमोरियां और खुजली से राहत देता है।

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

☎ 1800 22 9898 ✉ consumercare@piramal.com

^टेटमोसॉल साबुन खुजली (स्केबीज़) के कणो के कारण होने वाले संक्रमण के लिए है। टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह लें। संक्रमण की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें। #खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किया गया, MAT May 2020 में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें। रचनात्मक प्रदर्शन।

CMAC - TP/20210308-04

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
New Pack
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT LIQUID
STOMAFIT CHEWABLE
KEEPS STOMACH FIT & HEALTHY

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

सुनो जी, मिसेज शर्मा हैं परेशान, क्योंकि शर्मा जी को कब्ज़ ने कर रखा है हैरान।
अरी भाग्यवान, मिसेज शर्मा को बताएं, बाजार से स्टोमाफिट लाएं, शर्मा जी को पिलाएं और कब्ज़ दूर भगाएं।
टेढ़ू जी और टेलिफोन

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

निम्नलिखित कारणों से हुई कमजोरी को दूर करने में सहायक

गर्भधारण, हुकवार्म, पेट में कीड़े,
मासिक धर्म, साधारण कमजोरी,
बीमारी या संक्रमण, बवासीर से एनीमिया,
बच्चों में कमजोरी व थकावट

परिवार के हर उम्र के— सदस्य के लिए लाभकारी...

शहद सा गाढा
संतरे सा स्वादिष्ट

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध (450ml)

SCAN TO BUY HAEMOCAL

Please contact for more information:
SUNCARE FORMULATIONS PVT. LTD.
Ph.: 8447977889/ 999, 011-46108735, Mail: info@stomafit.com
Available on all major Online Pharmacies

SCAN TO BUY STOMAFIT

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज
संस्थापक : विश्वनाथ (*1917-2002*)
नवंबर (द्वितीय) 2021
अंक: 692
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक वासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मोंटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं–

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
· Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055, India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 12 रु., एक साल के लिए 564 रु., 2 साल के लिए 1128 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, नईगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

गहरी पैठ

राजस्थान, पश्चिम बंगाल, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दादर और नागर हवेली, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के कैंडीडेटों की उपचुनावों में हार ने साफ हवा का रुख बता दिया है कि राम मंदिर और हिंदूमुसलिम की काठ की हांड़ी अब महंगी गैस और महंगी दाल की वजह से टिकेगी नहीं. अंधभक्त अभी भी कह रहे हैं कि यह बात तो उपचुनावों की है, 2024 में तो भारतीय जनता पार्टी ही आएगी.

2024 में क्या होगा, यह नहीं मालूम. पर यह मालूम है कि जहां अमेरिका, इंगलैंड, यूरोप में कोविड के दौरान लोगों को सरकार से इतनी ज्यादा सहायता मिली कि अब वहां कामगारों की गिनती गिर गई है और लोग घरों में सुस्ता रहे हैं पर पेट भरे हैं. दुकानें खाली हो गई हैं, भारत में दुकानों में सामान लदा है और खरीदार नहीं हैं. भारत सरकार ने घी के दिए जलवाए, थालियांतालियां बजवाईं, पर गरीबों को बुरी तरह आहत किया जिस का असर अब बैलेट बौक्सों में दिखना शुरू हो गया है.

भारतीय जनता पार्टी को हराना आसान नहीं है क्योंकि उस के कई करोड़ पंडेपुजारी, मुफ्त के वर्कर रातदिन उस का नाम जपते हैं और जहां भी मौका मिलता है, जनता को बहकाने में लग जाते हैं. दूसरी गैरभाजपा पार्टियों के पास न पैसा है और न पुलिस की ताकत जिस के बल पर वे बुरी तरह से त्रस्त जनता के आंसू वोटों के रूमाल से पोंछ सकें. ऐसे में भी पूरे भारत में, सिर्फ मध्य प्रदेश और उत्तरपूर्व के छोटे राज्य छोड़ कर कहीं भी भारतीय जनता पार्टी सफलता नहीं पा पाई, बड़ी बात है.

आम जनता को बहकाना आज बहुत आसान है. आम जनता पहले अफवाहों पर भरोसा करती थी, अब मुफ्त में मिलने वाले टीवी चैनलों से जानकारी लेती है. पहले सारी जानकारी रामायण, महाभारत और पुराणों की कहानियों से निकलती थी, अब इन्हीं पुराणों की ऊंचनीच, वर्ण व जाति व्यवस्था, हिंदूमुसलिम करने वाले झूठ के पुलिंदे टीवी न्यूज चैनलों से या उन ह्वाट्सएप संदेशों से, जिन के नीचे कहीं लिखने वाले का नाम भी नहीं होता.

ममता बनर्जी ने तो पश्चिम बंगाल में अप्रैलमई की कहानी दोहराई है और भाजपा के सारे मनसूबे सालों के लिए बंगाल की खाड़ी में धकेल दिए हैं. जमीनी नेता को न सिर्फ नब्ज पता है, सीधी साड़ी, सादी गाड़ी वाली, सादे लोगों की नेता है और एक अपनापन उस से अपनेआप जुड़ जाता है. जो मार उस ने भाजपा को दिलाई है, किसी और ने नहीं.

मध्य प्रदेश की जनता हमेशा से पंडेपुजारियों की सुनती रही. शायद इसलिए कि वहां उत्तर भारत की तरह का सा भेदभाव कम रहा है और ऊंचे व नीचे बराबर के से गरीब रहे हैं. वहां भाजपा सिंधियाओं और भोंसलों के जमाने की उगी खेती को आसानी से काट रही है और श्यामाचरण शुक्ल के जमाने से धर्म को पेट की भूख से ज्यादा भाव देती रही है. भाजपा की जीत शायद उसी की देन है. हालांकि वहां भी वह कमजोर हो गई है.

किसी भी देश की जनता को बेवकूफ बनाया जा सकता है, पर बहुत दिनों तक नहीं. हां, अगर जनता का मुंह बंदूकों से बंद हो तो बात दूसरी है. हम कई सदियों तक गुलामी देख चुके हैं जबकि बंदूक या तलवार रखने वाले मुट्ठीभर होते थे और आम जनता कई गुना. जिस कौम को अपने हकों का एहसास न हो और जो अफीम, शराब या धर्म और पाखंड के नशे में डूबी रहे उस की गुलामी पक्की है. इस गुलामी में उस की फटी कमीज छीन ली जाए या 2 रोटी में से डेढ़ उठा ली जाए तो बड़ी बात नहीं. अपने हकों के लिए हक भी जानने होंगे, मांगने भी होंगे और वोट के जरीए छीनने भी होंगे. सिर्फ चुने जाने, मूर्ति पर पैसा चढ़ाने से सरकार की नीतियां नहीं बदलतीं.

* * *

हरियाणा सरकार नई नौकरियां तो पैदा नहीं कर पा रही है इसलिए अपने राज्य के वोटरों को लौलीपौप देने के लिए उस ने प्राइवेट कंपनियों में 30,000 रुपए से कम वेतन पाने वालों का 75 फीसदी कोटा हरियाणवी युवाओं के लिए तय किया है. 15 जनवरी, 2022 से लागू होने वाला यह कानून सरकारी नौकरियों पर लागू नहीं होगा पर हरियाणा के गुरुग्राम, कुंडली, फरीदाबाद, बहादुरगढ़ इलाकों में बने कारखानों में दहशत पैदा कर देगा और बाहरी बिहारी, मध्य प्रदेशी और उड़िया कामगारों को बेरोजगारी में धकेल सकता है.

यह कानून वैसे लागू नहीं हो सकता क्योंकि पहले सिरे से भारत के संविधान के खिलाफ है पर जब तक सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा कोई खटखटाएगा और कोई फैसला आएगा 4-5 साल लग जाएंगे और तब तक लेबर डिपार्टमैंट के इंस्पैक्टरों की बन आएगी जो मारुति जैसी कंपनियों के दरवाजों पर खड़े हो कर हरेक के बारे में ऐसी चैकिंग करेंगे जैसी भारतपाक सीमा पर की जाती है.

इस बेवकूफी वाले कानून से हरियाणा सरकार हरियाणवी और गैरहरियाणवी के बीच बेकार में एक खाई पैदा कर रही है. हिंदूमुसलिम और ब्राह्मणअछूत की खाई को हर रोज चौड़ा करने वाली भाजपा सरकार अब उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब से आए किसी भी जातिधर्म के कम वेतन वाले को राज्य निकाले का तुगलकी हुक्म दे देगी. हर कारखाने में, हर दफ्तर में अब कौन हरियाणा का है, कौन बाहर का है की गिनती शुरू हो जाएगी. हर मशीन पर लगे 4 लोगों के बीच मनमुटाव शुरू हो जाएगा, हर दफ्तर में खेमे बन जाएंगे.

यह काम सिर्फ वोटों के लिए हो रहा है. मनोहर लाल सरकार हरियाणा के युवाओं को नौकरी तो दिला नहीं पा रही है क्योंकि न सरकारी, न गैरसरकारी नौकरियां बढ़ रही हैं इसलिए वह जहां जो काम कर रहा है उसे परेशान करने का नियम बना कर राज्य पर थोप रही है.

भारतीय जनता पार्टी को बिहारी, उत्तर प्रदेशी, पंजाबी, राजस्थानी, उड़िया गरीब मजदूरों से कितनी नफरत है इस का सुबूत यह है कि वह पूरे राज्य के कारखानों व दफ्तरों में इन की गिनती को सिर्फ 25 फीसदी तक रोकना चाहती है. दिल्ली वाले भी हरियाणा जा कर नौकरी नहीं कर सकते. हरियाणा को नष्ट करने की यह योजना अगर पूरी तरह लागू हो गई तो पूरा हरियाणा बंजर जमीन बन जाए तो बड़ी बात नहीं होगी. ●

ग्लोइंग स्किन के लिए
प्राकृतिक नुस्ख़ा

आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।

New
Dr. Juneja's
Roop Mantra®
Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash

Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash

• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com

शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों से निर्मित

शाप है जन्म से मिला वर्ग का ठप्पा

चितरंजन भारती

आज का समय प्रतियोगिता का है. प्रतियोगिता से मतलब है सब को बराबर की जमीन और बराबर के मौके के साथसाथ कानून में हक भी बराबर मिले.

विरासत में आदमी अपने पिता के काम को ही अपनाता है, क्योंकि शुरू से ही वह उसे देखतासुनता और समझता है. पहले किसान और कारीगर 2 ही वर्ग थे. आगे चल कर हाकिम, पंडों के वर्ग तैयार हुए. आज दुनियाभर में जो 2 वर्ग हैं, वे हाकिम या अमीर वर्ग हैं और गुलाम या गरीब वर्ग.

हाकिम वर्ग में सामंत व पुरोहित वर्ग और कारोबारी जुड़े हैं, जबकि गुलाम वर्ग में किसान और कारीगर वर्ग और दूसरे मजदूर हैं. दोनों में कैसी प्रतियोगिता, कैसी बराबरी, कैसा बराबर का मौका?

भारत में तो यह वर्ग जाति के रूप में बदल गया. हिंदू समाज के पंडेपुरोहितों ने ऐसे नियम बनाए कि पूरा समाज 2 वर्गों की 4 जातियों में बंट कर रह गया. हिंदू धार्मिक ग्रंथों ने इन का खूब प्रचार किया.

इन 4 जातियों के तहत भी सैकड़ोंहजारों जातियां बना डाली गई हैं, ताकि सब एकदूसरे से उलझी रहें. अलगअलग समूह बन गए.

इन के रोजीरोजगार से ले कर शादीब्याह तक को अनेक रिवाजों से जकड़ दिया गया कि वे इस के जंजाल से बाहर जाने की सोच भी नहीं सकते थे. जो इस के बाहर जाना भी चाहता, तो उसे हाकिम का डंडा या समाज से बाहर जाने की सजा भुगतनी होती थी.

इन विधानों को हालांकि समयसमय पर चुनौती मिली, मगर समाज में बदलाव आ नहीं पाया. पुरोहित वर्ग ने हथियार उठाने वाले वर्ग के साथ मिल कर चुनौती देने वालों को या तो खत्म कर दिया या उन्हें भी पूजनीय बना किनारे कर दिया.

महावीर और बुद्ध को देख सकते हैं कि उन के विचारों के आधार पर उन्हें अलगथलग ही कर दिया गया. भीमराव अंबेडकर के मुताबिक, भारतीय समाज में लोग धर्म बदल सकते हैं, पर हिंदू रह कर जाति नहीं बदल सकते.

मुसलिम शासकों ने तो नहीं, मगर ब्रिटिश शासकों ने कुछ नियमों को बदलने की कोशिश की. ब्रिटिश शासकों के समय में उन की कुछ सख्ती या कुछ नरमी की वजह से बदलाव जरूर आए. अंगरेजों की दी गई पढ़ाईलिखाई से समाज में कुछ बदलाव आए जैसे सती प्रथा व परदा प्रथा का खात्मा हुआ. स्त्री शिक्षा का विकास, सभी इनसानों के लिए एकसमान कानून वगैरह आए.

ब्रिटिश सेना और नौकरियों में सभी भारतीयों के साथ एकजैसा बरताव और सुविधाएं वगैरह मिलती थीं. सरकारी नौकरीपेशा के रूप में एक नए मध्य वर्ग का विकास होने लगा था.

आजादी के बाद संविधान ने तो सभी के लिए एकसमान नियमकानून लागू किए थे, फिर भी सामंती सोच वाले लोग इसे मानने को तैयार नहीं थे. इन्हें उकसानेबहकाने में पंडों का एक खास वर्ग बड़ा योगदान देता था.

एक मठाधीश ने कहा कि जो इनसान अपने वर्ग के लोगों को छोड़ कर दूसरे वर्ग का सहारा लेता है, वह उसी तरह बरबाद हो जाता है, जैसे अधर्म का सहारा लेने वाला राजा. इस तरह अधर्म के मानने वाले राजाओं की कहानियों में बहुत पट्टी पढ़ाई गई है, जो राजा और प्रजा दोनों को आगाह करती रही है.

सवाल है कि आदमी को क्या सिर्फ अपने ही वर्ग में रहना चाहिए और दूसरे वर्ग के साथ मेलजोल नहीं रखना चाहिए? धर्म के दुकानदार तो यही मान कर चलते हैं, क्योंकि इसी से उन्हें आसानी रहती है. उन के बनेबनाए ढांचे में उन के हक बनाए रखना आसान रहता है. मेहनत नहीं करनी होती, सवाल नहीं खड़े होते.

मध्य काल में भारत के ज्यादातर राजा तो आपस में ही लड़ते रहे, पर उसी समय अनेक कवियों जैसे कबीर, रैदास, नानक, मीरा आदि ने अपनी जाति की सीमा तोड़ बेहतरीन कविताएं लिखीं और आज अमर हैं.

होना तो यही चाहिए कि सभी अपने इनसान वर्ग से ऊपर उठें.

एक मुलाजिम अफसर बने, तो अफसर और बड़े अफसर के वर्ग में जाने की जीतोड़ कोशिश करे.

नौकरियों में ऐसे इंतजाम हों कि हर शख्स को अपनी पढ़ाई, मेहनत और हुनर के बल पर ऊपर वाले वर्ग में जाने का मौका मिले. गांव में रहने वाला शहर में रहने के सपने देखे, तो स्लम एरिया में रहने वाला पौश एरिया में रहने की कोशिश करे.

पर पहले राजतंत्र या धर्मतंत्र में इस भावना पर रोक थी, मगर अब के लोकतंत्र में भी पूरा साथ नहीं मिल रहा है. इसे ले कर सरकारें बनती या बिगड़ती भी हैं.

जैविक आधार पर 2 वर्ग तो रहेंगे ही, आदमी और औरत. इन से 2 वर्ग सामने आए, मजबूत और कमजोर. खेती जानने पर 2 और वर्ग बने, किसान और कारीगर.

मगर ज्योंज्यों आदमी की तरक्की हुई, पैसा बढ़ा, तकनीक बढ़ी, ज्यादा वर्ग बनने लगे. भूस्वामी सामंत के रूप में उभरे, एक बौद्धिक वर्ग भी पैदा हुआ, जो पंडों के वर्ग के रूप में दुनियाभर में सामने आया.

एक तीसरा वर्ग बना

Divisa

सच्ची सहेली®

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक

कठिन दर्द

चिड़चिड़ापन

थकान

कमजोरी

कमर कटना

इम्यूनिटी

आदि में सहायक

New
सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
INDIA'S MOST TRUSTED BRAND
67 जड़ी-बूटियों से बना,
महिलाओं के लिए भरोसेमंद आयुर्वेदिक टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli

Available at all medical & general stores

कारोबारी का. और ये तीनों लोकतंत्र थे. समाज के बाकी लोग नीचे या सादे वर्ग में थे और इन की भी कोशिश रहती थी कि वे बढ़ कर ऊंचे वर्ग में शामिल हो जाएं.

भारत में वर्ग का बंटवारा आगे चल कर जातियों की मुश्किल व्यवस्था में बदल गया. पुरोहित वर्ग ने हमेशा यह कोशिश की कि यह उलझी जाति व्यवस्था बनी रहे. आजादी के पहले के आंदोलनों, पढ़ाई और राजनीतिक कोशिशों के चलते इस में फर्क हुआ. संविधान ऐसा बनाना चाहा, जिस में वर्गों को खत्म करने का आदेश था.

अमीर वर्ग चूंकि सत्ता से जुड़े रहे हैं, उन्हें फायदा मिलता रहा है. दुनियाभर में राजा, सामंत, पुरोहित, कारोबारी का गठजोड़ रहा. दूसरे देशों में फिर भी अपने वर्ग से दूसरे वर्ग में पैसे या पढ़ाईलिखाई की वजह से आनेजाने की सुविधा रही.

मगर भारत में यह वर्ग पौराणिक जन्मना जाति व्यवस्था में बदल जाने की वजह से नहीं हुआ. पुरोहित वर्ग प्राचीन धार्मिक शिक्षा, शास्त्र या संस्कार का हवाला देते हैं, एक सिरे से इस के समर्थन में रहते हैं और जो लोग इस से निकलने की कोशिश करते हैं, उन्हें फंसाफंसा कर अपनीअपनी जगह बनाए रखने की कोशिश की जाती है.

गांवों और शहरी इलाकों में भी इस के फर्क को देखा और महसूस किया जा सकता है. होता तो यह है कि जो इनसान गांव में रहते हुए इस जाति भेद के पक्ष में रहता है, वही शहरी क्षेत्र में जाति विरोधी हो जाता है. शहर में आ कर वह जन्मना जाति के खिलाफ हो, काम से तय वर्ग की बातें करने लगता है. वैसे भी बहुत है सघन आबादी वाले शहरों में यह मुमकिन नहीं कि कोई जाति की बात करे, क्योंकि कानूनन पब्लिक सेवाओं पर सभी का बराबर हक रहता है. चाहे सरकारी सुविधाएं हों या स्कूलकालेज, बाजार हों या पार्क, सभी उस का इस्तेमाल करते हैं.

गांव, छोटे कसबों से सार्वजनिक जगहों, वह चाहे नदी, तालाब का घाट हो या स्कूलअस्पताल, सभी पर भी यही बात लागू तो है, मगर दिक्कत तब आती है, जब कोई दबंग या जाति वहां अपना एकाधिकार जमा लेती है. ऐसा होने की एक बड़ी वजह यह है कि गांवों से थानापुलिस बहुत दूर होते हैं या वे भी उन का साथ देने लग जाते हैं.

मगर जैसेजैसे जागरूकता आ रही है, ये बातें भी कम हो रही हैं. ऐसे नाजुक मोड़ पर ही कोई बाबा या धार्मिक ठेकेदार कोई उकसाने वाली बात कह जाता है, तो मामला खराब हो जाता है.

आज भी दिक्कत यह है कि जैसे ही कोई जागरूक उन के खिलाफ आवाज उठाता है, उस पर मारपीट, गाली देने से खतरे आने लगते हैं. जो इन खतरों को झेल जाता है, वही समाज को आगे ले जाता है. गांवों से शहरों की ओर भागने की यह एक बड़ी वजह यही है.

आर्थिक स्तर पर वर्ग की लड़ाई शहरों के बजाय गांवों में ज्यादा होती है. एक समय ऐसा भी था, जब निचले वर्ग से ऊंचे वर्ग द्वारा बेगारी कराई जाती थी बिना पैसे दिए. वह तो खत्म हुआ, मगर अभी भी कम मजदूरी देना या मजदूरी देने में देरी करना आम बात है और यह भी लड़ाई का एक मुद्दा बन जाता है और इन सभी के पीछे यही जन्म से मिला भेद है. इसे बनाए रखने के लिए संतमहात्मा जोर देते रहते हैं.

प्रोफैसर राजेंद्र प्रसाद सिंह के मुताबिक, "हर जाति अपने से नीची एक जाति खोज लेती है और यह सिद्धांत जाति बनाने वाले का दिया हुआ है, ताकि इस बला का ठीकरा हर जाति के सिर फोड़ा जा सके."

एक समय ऐसा था, जब लोग दूरियां बना कर रखते थे. जन्म से पैदा हुई जाति में दूरी तो थी ही, धार्मिक दूरियां भी थीं. मुसलिम शासनकाल में मुसलिम, तो ब्रिटिश काल में ईसाई वर्ग ऊंचा होने के घमंड से भरे रहते थे.

तथाकथित प्रजा कहलाने वाले हिंदू भी उन से दूरी बनाए रखते थे और दूसरी ओर अपने ही धर्म की निचली जातियों से भयंकर दूरी बनाए रखते थे.

यह हैरानी की बात है कि भारतीय मुसलिम और ईसाइयों में भी यह भेदभाव की भावना घर कर गई है और निचले वर्ग से आए कन्वर्टिड मुसलिम और ईसाइयों के साथ भेदभाव रखने लगे हैं.

अब जातीय मिथक टूटने लगे हैं. कहींकहीं धार्मिक मिथक भी टूटे हैं. मगर ये शहरों में ही देखने को मिलता है, क्योंकि वहां सभी अपने काम से काम रखते हैं. पर गांवदेहात में ऐसा कुछ होने पर अनदेखी, मजाक और दिक्कत का भी सामना करना पड़ता है और इस के लिए सिर्फ और सिर्फ धर्म के धंधेबाज कुसूरवार हैं.

एक बैंक के मैनेजर रहे अरविंद गुप्त ने सुधा श्रीवास्तव से प्रेमविवाह किया, तो उन की खूब बुराई हुई. दोनों को ही अपनी जातियों में अनदेखी और मजाक का सामना करना पड़ा. मगर उन्होंने इस की परवाह नहीं की और सामान्य जिंदगी जीते रहे और आज 32 साल बाद भी वह सुखी जिंदगी जी रहे हैं.

नेताओं में शाहनवाज हुसेन, रामविलास पासवान, शैलेंद्रनाथ श्रीवास्तव जैसे अनेक उदाहरण समाज में दिख जाते हैं, जिन्होंने जातिधर्म का बंधन तोड़ शादी की और सुखी जिंदगी बिताई.

सिनेमा और टैलीविजन जगत में काम कर रहे लोगों में यह धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र वगैरह की दीवार देखी ही नहीं जाती. ऐसे में यह नहीं कहा जा सकता कि दूसरे वर्ग में जाने से नुकसान होता है.

जहां कुछ प्रेमविवाह नाकाम होते हैं, उस के पीछे उन की कुछ कुंठाएं या इच्छाएं होती हैं. कुछ तथाकथित धर्म के ठेकेदारों या बाबाओं द्वारा दी गई सीख भी होती है, जिस में उलझ कर वे अपनी सुखी जिंदगी को बरबाद कर देते हैं.

वैसे देखा जाए तो क्या धर्म और जाति आधारित शादी नाकाम नहीं होती? यह तो इनसानइनसान की सोच पर निर्भर करता है कि वह अपनी जिंदगी में इसे कितना निभा पाता है.

फिल्म, खेल, राजनीति से जुड़े लोगों के बीच वर्ग और जाति भेद को दरकिनार कर शादियां करना आम बात है. मगर उन्होंने इस की परवाह नहीं की और बेहतर जिंदगी जीते रहे. ऐसे में यह कहना कि वर्ग से बाहर जा कर जिंदगी बिताना गलत है, मजाक ही माना जाएगा. ●

प्यार बढ़ेगा, दूध बहेगा!
कपिला पशु आहार एवं कश्यप
सबसे ज्यादा 75% पोषण
अच्छा स्वास्थ्य | लंबी आयु | ज़्यादा दूध
सुप्रीम पैलेट SUPREME PELLET
एक मात्र निर्माता : कामधेनु कैटिल फीड्स प्रा० लि० ● 84/54, जरीब चौकी, जी.टी. रोड, कानपुर • Ph.: 0512-2520177, 2520178, 9235425981, E-mail :info@kapilacattlefeed.com

Mr. Cook®
Pressure Cookers
देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...
WARRANTY 60 MONTHS
Mr. Cook PRESSURE COOKER
मिस्टर कुक प्रेशर कुकर
SUPERIOR QUALITY
5 LITRE
METALIK
Mr. Cook PRESSURE COOKER
IS : 2347
CM/L-3294967

United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

लव सैक्स और गोली

बीरेंद्र बरियार ज्योति

एक शादीशुदा और 2 बच्चों की मां खुशबू अपने पति राजीव सिंह के जिम ट्रेनर के गठीले बदन पर कुछ इस कदर फिदा हुई कि उस की मुहब्बत एक दिन नफरत में बदल गई और अपने आशिक की जान लेने के लिए कौंट्रैक्ट किलर की मदद से उस पर गोलियों की बौछार करवा दी.

लव, सैक्स और गोली के इस केस में खुशबू, राजीव समेत सभी आरोपी पुलिस के फंदे में फंस चुके हैं. राजीव फिजियो थैरेपिस्ट है और जनता दल (यू) के मैडिकल सैल का उपाध्यक्ष है. इस केस में नाम आने के बाद पार्टी ने उसे पद से हटा दिया है.

पिछले 18 सितंबर की सुबह 6 बजे विक्रम लोहानीपुर महल्ले के अपने घर से जिम जाने के लिए स्कूटी से निकला, तो रास्ते में कदमकुआं इलाके के बुद्ध मूर्ति के पास शूटरों ने उस पर गोलियां चला दीं.

विक्रम लहूलुहान हो कर स्कूटी से गिर पड़ा और आसपास खड़े लोगों से अस्पताल पहुंचाने की गुहार लगाने लगा. किसी ने दर्द से छटपटाते विक्रम की बात नहीं सुनी. आखिरकार खून से लथपथ विक्रम खुद ही उठा और स्कूटी चला कर पास के प्राइवेट अस्पताल पहुंचा.

प्राइवेट अस्पताल ने उसे भरती करने से इनकार कर दिया, तो वह पटना मैडिकल कालेज पहुंचा. वहां तुरंत आपरेशन किया गया और उस के जिस्म से 5 गोलियां निकाली गईं.

आशिकी के चक्कर में खुशबू ने विक्रम पर सुपारी किलर से गोलियां चलवाई थीं. इस के लिए पुराने दोस्त मिहिर सिंह के जरीए सुपारी किलर को ढाई लाख रुपए दिए गए थे.

पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए कहा कि राजीव, खुशबू, मिहिर और 3 सुपारी किलरों को गिरफ्तार किया गया है. सुपारी किलर अमन कुमार, शमशाद और आर्यन उर्फ रोहित से पुलिस पूछताछ कर चुकी है और सभी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है.

18 सितंबर को सुपारी किलरों ने विक्रम के जिस्म में 5 गोलियां दागी थीं. अपराधियों ने कबूल किया कि उन्हीं लोगों ने विक्रम पर गोलियां चलाई थीं और इस काम के लिए मिहिर ने उन्हें रुपए दिए थे.

अमन एमबीए का स्टूडैंट है और डिलीवरी बौय का काम करता है. शमशाद गोवा में राजमिस्त्री का काम करता था और लौकडाउन की वजह से वह पटना आया हुआ था. अमन और शमशाद भागवतनगर में किराए के मकान में साथ रहते हैं. मकान का किराया 14,000 रुपए है. मिहिर के चचेरे भाई सूरज ने मिहिर की मुलाकात अमन से कराई थी.

जिम ट्रेनर को जान से मारने की धमकी देने का आडियो भी पुलिस को मिला. ट्रेनर की बीवी और परिवार वालों ने पुलिस को बताया कि आडियो में धमकी देने वाली महिला खुशबू की आवाज है, जो फिजियो थैरेपिस्ट राजीव कुमार सिंह की बीवी है.

ट्रेनर की बीवी वर्षा का आरोप है कि फिजियो थैरेपिस्ट की बीवी ने उस के पति को फोन पर गंदीगंदी गालियां भी दी थीं. उस ने बताया कि खुशबू अकसर पटना मार्केट के 'द जिम सिटी' पहुंच जाती थी.

जिम ट्रेनर विक्रम और खुशबू

पहले तो फिजियो थैरेपिस्ट राजीव ने पुलिस को बताया कि जिम ट्रेनर विक्रम पर हुए हमले में उस का और उस की बीवी का कोई हाथ नहीं है.

अलबम बनाने के नाम पर विक्रम ने 60,000 रुपए लिए थे. अलबम नहीं बनाने पर राजीव और विक्रम से तीखी नोकझोंक हुई थी और रुपया लौटाने की बात हुई थी. बाद में विक्रम ने राजीव के अकाउंट में 40,000 रुपए और खुशबू के अकाउंट में 20,000 रुपए डाल दिए थे. मई महीने के बाद से राजीव और विक्रम से कोई बातचीत नहीं हुई थी.

एसएसपी उपेंद्र शर्मा ने बताया कि खुशबू का कहना है कि विक्रम उस का पीछा नहीं छोड़ रहा था और वह उस से पीछा छुड़ाना चाह रही थी. खुशबू का कहना है कि 60,000 रुपए के लेनदेन को ले कर विवाद पैदा हुआ था.

पुलिस को दिए गए बयान में विक्रम ने कहा है कि खुशबू उसे पिछले एक साल से परेशान कर रही थी. एक साल तक वह राजीव को उन के पाटलीपुत्र कालोनी वाले घर में ऐक्सरसाइज कराने जाता था. पैसे को ले कर हिसाबकिताब ठीक नहीं रहने पर उस ने वहां जाना बंद कर दिया. उस के बाद खुशबू ने उसे सोशल मीडिया के जरीए तंग करना चालू कर दिया. एक बार खुशबू ने गुस्से में उस के सीने पर ब्लेड से हमला किया था.

पुलिस ने खुशबू और राजीव के मोबाइल फोन को खंगाला तो खुलासा हुआ कि जनवरी में खुशबू और विक्रम के बीच 1100 बार बातचीत हुई. राजीव से आखिरी बार 18 अप्रैल को बात हुई थी. उन के बीच ह्वाट्सएप और वीडियो काल के जरीए बातचीत होती थी.

सितंबर, 2020 से मई, 2021 के बीच खुशबू ने विक्रम को 1875 काल की थी. दोनों के बीच साढ़े 5 लाख सैकंड बातचीत हुई थी. इतने ही समय के दौरान खुशबू ने अपने पति राजीव को महज 13 बार फोन किया. खुशबू और विक्रम के बीच अकसर घंटों बातें होती थीं.

मिहिर ने पुलिस को बताया कि वह 5-6 सालों से खुशबू को जानता था. खुशबू ने ही उस से कहा था कि विक्रम उसे परेशान करता है, इस वजह से वह उस की हत्या करवाना चाहती है. सुपारी किलर को जुलाई में ही एक लाख, 85 हजार रुपए दिए थे. एसएसपी ने बताया कि कुछ साल पहले मिहिर और खुशबू की पहचान भी फेसबुक के जरीए ही हुई थी.

पुलिस की छानबीन से यह बात भी सामने आई कि 5-6 साल पहले खुशबू और मिहिर के बीच भी गहरा रिश्ता रहा था. मिहिर भी खुशबू का प्रेमी रह चुका है. जब विक्रम ने खुशबू से कन्नी काटना शुरू किया, तो खुशबू को पुराने आशिक मिहिर की याद आई. उस ने मिहिर से कहा कि विक्रम उसे बहुत परेशान कर रहा है और फिर दोनों ने मिल कर विक्रम को रास्ते से हटाने की साजिश रची.

खुशबू ने मिहिर से यह भी कहा कि विक्रम को ठिकाने लगाने के लिए वह रुपयों की चिंता न करे. विक्रम को मारने के लिए मिहिर ने खुशबू से 3 लाख रुपए मांगे. खुशबू ने 3 किस्तों में एक लाख, 85 हजार रुपए मिहिर को दिए.

मिहिर ने अपने चचेरे भाई सूरज के साथ मिल कर पूरी साजिश रची. उस के बाद शार्प शूटर अमन, आर्यन और शमशाद को विक्रम को मारने की सुपारी दी गई.

शूटरों के साथ यह डील अगस्त महीने की शुरुआत में ही हुई थी. अगस्त महीना खत्म हो गया और उस के बाद सितंबर भी आधा खत्म हो गया और विक्रम को ठिकाने नहीं लगाया जा सका तो खुशबू परेशान हो गई. उस ने मिहिर पर दबाव बनाना शुरू किया.

विक्रम राजीव को जिम ट्रेनिंग देने के लिए उस के घर पर जाता था. वहीं खुशबू से जानपहचान हुई और बातचीत शुरू हुई. विक्रम के गठीले बदन को देख खुशबू उस पर फिदा हो गई. वह धीरेधीरे विक्रम के करीब आती गई. वह पटना

मार्केट के पास विक्रम के जिम में पहुंचने लगी और वहीं कईकई घंटों तक बैठी रहती थी.

विक्रम ने पुलिस को बताया कि वह उस के साथ जिस्मानी रिश्ता बनाना चाहती थी. ऐसा नहीं करने पर वह उसे फंसाने और ब्लैकमेल करने की धमकी देने लगी. जब विक्रम उस से दूर रहने की कोशिश करने लगा तो एक रात को विक्रम के घर पहुंच गई और हंगामा मचाने लगी.

खुशबू की हरकतों से आजिज आ कर विक्रम ने डाक्टर राजीव को फोन कर सारे मामले की जानकारी भी दी. विक्रम ने उस से कहा कि खुशबू उसे पिछले कई दिनों से परेशान कर रही है.

डाक्टर राजीव ने विक्रम की बातों पर यकीन नहीं किया और उस से कहा कि सुबूत ले कर आओ, उस के बाद देखा जाएगा.

विक्रम के बयान पर कदमकुआं थाने में केस दर्ज किया गया. केस नंबर है- 477/2021. आरोपियों पर आईपीसी की धारा-307, 120बी, 34 और 27 के तहत केस दर्ज किया गया है. ●

खुशबू : कैसी धाकड़ है?

केस की जांचपड़ताल के दौरान पटना पुलिस ने खुशबू के फेसबुक, इंस्टाग्राम और ह्वाट्सएप एकाउंट को खंगाला. इंस्टाग्राम के पोस्ट किए गए एक वीडियो को देख कर पुलिस की आंखें फटी रह गईं.

खुशबू ने मिहिर को एक टिकटौक वीडियो भेजा था, जिस से खुशबू के खतरनाक इरादों का पता चल जाता है. उस में खुशबू ने कहा था, 'अगर तुम हर्ट होते हो तो डीपी हटा लेते हो, लेकिन हम हर्ट होते हैं तो बंदा ही हटा देते हैं.'

अपनी इन बातों पर अमल करने के लिए ही खुशबू ने विक्रम पर गोलियां बरसा कर उस की जान लेने की कोशिश की.

राजीव और खुशबू

झारखंड का बिहारीकरण : बोली के जरीए तकरार

बीरेंद्र

बिहार और झारखंड के बीच एक नया विवाद शुरू हो गया है. इस इलाकाई कार्ड के विवाद की आग को शुरू किया झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उसे हवा दे दी है.

हेमंत सोरेन ने यह कह कर बवाल मचा दिया कि झारखंड में रहने वाले मगही और भोजपुरी बोलने वाले दबंग हैं और वे लोग झारखंड का बिहारीकरण कर रहे हैं, जिसे किसी भी हाल में बरदाश्त नहीं किया जाएगा.

वहीं नीतीश कुमार ने हेमंत सोरेन पर पलटवार करते हुए कहा कि सियासी फायदा उठाने के लिए ऐसी बयानबाजी से बचना चाहिए. इस के बाद बिहार और झारखंड के कई नेताओं ने एकदूसरे के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया है.

गौरतलब है कि मार्च, 2018 में उस समय की भाजपा सरकार ने मगही, भोजपुरी, मैथिली और अंगिका को दूसरी भाषा का दर्जा दिया था. अब हेमंत सरकार ने भाजपा की रोजगार नीति को पलट दिया है और झारखंड स्टेट सर्विस कमीशन में क्वालिफाइंग के लिए इन चारों भाषाओं को हटा दिया है.

इस मसले पर हेमंत सोरेन कहते हैं कि पहले की सरकार ने ऐसी बहाली नीति बना रखी थी, जिस से लोकल लोगों से ज्यादा बाहरी लोगों को मौका मिलता था. झारखंड राज्य आदिवासियों और स्थानीय लोगों की तरक्की के लिए बना था, न कि मगही और भोजपुरी बोलने वालों के लिए. बिहार और भोजपुरी व मगही भाषा के खिलाफ मोरचा खोल कर हेमंत सोरेन ने स्थानीयता का कार्ड खेला है.

हेमंत सोरेन यहीं नहीं रुकते हैं, बल्कि वे भोजपुरी और मगही बोलने वालों पर यह आरोप लगा देते हैं कि जब अलग झारखंड राज्य बनाने की लड़ाई चल रही थी, तो भोजपुरी और मगही बोलने वाले आदिवासियों को गंदीगंदी गालियां देते थे और आदिवासी औरतों के साथ गलत बरताव करते थे. इस से उन के मन में भोजपुरी और मगही वालों के खिलाफ काफी गुस्सा है.

3 करोड़, 30 लाख की आबादी वाले झारखंड राज्य में भोजपुरी और मगही बोलने वालों की आबादी तकरीबन साढ़े 6 फीसदी है, वहीं आदिवासियों की तादाद 26 फीसदी है. हिंदी के अलावा बंगला, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुट्टमाली, कुडुख, संथाली, मुंडारी, हो वगैरह बोलियां बोली जाती हैं.

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भाषा के इस बवाल के बारे में कहते हैं कि बिहार और झारखंड तो भाईभाई हैं. ऐसे मसलों पर सोचसमझ कर बोलना चाहिए. अगर इस से किसी को सियासी फायदा मिलता है तो ले ले, लेकिन ऐसे मसलों से दूर ही रहना चाहिए.

पिछले दिनों हेमंत सोरेन ने कह दिया कि भोजुपरी और मगही उधर की भाषा है और इसे बोलने वाले लोग झारखंड को बिहार बनाना चाहते हैं. झारखंड पर कब्जा करना चाहते हैं. स्थानीय भाषा पर ये दोनों बाहरी भाषाएं हावी हैं. अब समय आ गया है कि झारखंड की तरक्की के लिए लोकल भाषाओं को बढ़ावा दिया जाए.

ऐसा नहीं करने से आदिवासी राज्य और इलाकाई बोलियों का वजूद ही खत्म हो जाएगा. दिलचस्प बात यह है कि हेमंत सोरेन की पढ़ाई पटना में हुई है और वे खुद अच्छीखासी मगही बोल लेते हैं.

हेमंत सोरेन से पहले झारखंड के मुख्यमंत्री रहे रघुवर दास कहते हैं कि हेमंत सोरेन की नीति 'बांटो और राज करो' की रही है. चुनाव से पहले उन्होंने बढ़चढ़ कर ऐलान किया था कि 5 लाख लोगों को नौकरी दी जाएगी.

मुख्यमंत्री अपने वादे को भूल गए हैं. अब जनता का ध्यान भटकाने के लिए वे ऐसा बचकाना बयान दे रहे हैं. मुख्यमंत्री को यह नहीं भूलना चाहिए कि वे केवल आदिवासियों के मुख्यमंत्री नहीं हैं, बल्कि झारखंड की साढ़े 3 करोड़ जनता के सेवक हैं.

हेमंत सरकार के वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव आग में घी डालते हुए कहते हैं कि क्या बिहार में संथाल और उरांव भाषा को मान्यता दी जाएगी? बिहार में रहने वाले संथाल और उरांव जातियों के लोगों की भाषा को सरकारी नौकरियों में मान्यता क्यों नहीं दी जाती है?

गौरतलब है कि बिहार के सहरसा, पूर्णियां, कटिहार, बांका, बेतिया और बगहा जिलों में संथाल और उरांव जातियों की बड़ी आबादी है.

बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष संजय जायसवाल कहते हैं कि झारखंड के मुख्यमंत्री समाज को बांटने की कोशिश में लगे हुए हैं, जो राज्य और जनता के भले के लिए नहीं है.

झारखंड हाईकोर्ट के वकील अभय सिन्हा कहते हैं कि बिहार के पढ़ेलिखे लोग झारखंड सरकार में ऊंचे पदों पर कायम हैं, इसी से हेमंत सोरेन को चिंता हो रही है.

हेमंत सोरेन आदिवासियों की बेहतरीन पढ़ाईलिखाई का इंतजाम करने और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के बजाय राजनीति का कार्ड खेल रहे हैं और आदिवासियों को लौलीपौप दिखा कर सिर्फ और सिर्फ वोट बैंक मजबूत करने की फिराक में हैं.

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अगर आदिवासियों को पढ़ालिखा कर बाहरी लोगों के बराबर खड़ा करेंगे, तभी आदिवासियों की तरक्की होगी और बाहरी लोगों का दबदबा भी खत्म होगा. ●

बढ़ती गांजे की लत

शैलेंद्र सिंह

हिंदी फिल्म कलाकार और पूरी दुनिया में 'किंग खान' के नाम से मशहूर सुपर स्टार शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान और उस के साथ कई लोगों को बैन किया गया. नशा अपने पास रखने और उस का सेवन करने का आरोप उन पर लगा, तो पूरी दुनिया में इस तरह के नशे पर बहस शुरू हो गई.

चिलम, तंबाकू और सिगरेट के साथ गांजे का इस्तेमाल भारत में लंबे समय से होता रहा है. कई मंदिरों में तो यह प्रसाद के तौर पर चढ़ता है. आयुर्वेद में गांजे को दवा के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है. नशे और दवा दोनों के रूप में गांजे का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है.

एक तरफ इस को नशा मान कर इस का कारोबार गैरकानूनी माना जाता है, वहीं दूसरी तरफ दवा और प्रसाद जैसा मान कर इस के बैन को हटाने की मांग भी की जा रही है.

इन सब बातों के बीच गांजे का सब से बड़ा और बुरा असर आम घरपरिवार पर पड़ रहा है. इस की वजह से परिवार के परिवार उजड़ रहे हैं. 50 रुपए की पुड़िया में मिलने के चलते यह सस्ता और मिलना आसान हो गया है. यही वजह है कि गांव के गरीब इस का सेवन कर के बरबाद हो रहे हैं.

गांजे का इस्तेमाल भारत के कई मंदिरों में प्रसाद के तौर पर किया जाता है. कई मंदिरों में इसे 'महादेव का प्रसाद' भी कहा जाता है. उत्तर कर्नाटक में कई ऐसे मंदिर हैं, जहां गांजे का इस्तेमाल प्रसाद के तौर पर किया जाता है.

यादगीर जिले के तिन्थिनी के मोरेश्वर मंदिर में छोटे पैकेट में गांजा बतौर प्रसाद मिलता है. बताया जाता है कि यह ध्यान करने में मददगार होता है.

बिहार के खगड़िया में कात्यायनी मां के मंदिर में भी दूध और गांजा प्रसाद के रूप में चढ़ता है. शिव मंदिरों में भी ऐसा ही चलन देखने को मिलता है. यही वजह है कि जब गांजा न पीने की बात की जाती है, तो पीने वाले कहते हैं कि यह नशा नहीं, बल्कि प्रसाद है.

तमाम साधुसंत इस का सेवन चिलम से धुआं उड़ाते करते हैं. हिंदी फिल्मों में भी 'दम मारो दम' जैसे गानों में चिलम के सहारे धुआं उड़ाते गाने सुने जा सकते हैं.

घरपरिवार पर बुरा असर

रात के तकरीबन 11 बज रहे थे. रामपुरगांव के रहने वाले शिवकुमार के घर पर निगोहां पुलिस का छापा पड़ा. शिवकुमार घर में नहीं मिला तो पुलिस ने उस की पत्नी स्वाति को हिरासत में ले लिया.

शिवकुमार के बारे में पुलिस को यह सूचना मिली थी कि वह गांजा बेचने का काम करता है. शिवकुमार के घर से पुलिस को गांजा मिला भी था. अपने पति की बुरी आदतों के चलते स्वाति को जेल जाना पड़ा. इस वजह से उसे गांव में बेहद बदनामी का सामना करना पड़ा.

गांजे का नशा करने वाला थकाथका सा रहता है. उसे देख कर लगता है, जैसे वह बहुत परेशान है. वह बातबात पर गुस्सा और मारपीट करता है. वह चीखनेचिल्लाने का काम ज्यादा करता है.

पिछले कुछ सालों से जब से शराब की कीमत बढ़ने लगी है और कच्ची शराब बनाना मुश्किल होने लगा है, तब से गांवदेहात में गांजे का इस्तेमाल नशे के रूप में बढ़ने लगा है.

इस की सब से बड़ी वजह यह है कि गांजा खरीदना सस्ता पड़ता है. इस के अलावा इस को पुड़िया के रूप में रखा जाता है. शराब की तरह इस की बदबू नहीं फैलती है. गांव में 2-4 लोग झुंड बना कर बैठ जाते हैं. वहां चिलम में रख कर इसे पीते हैं, जबकि देखने वाले को लगता है कि वे लोग तंबाकू पी रहे हैं. असल में तो वे गांजा पी रहे होते हैं.

गांजा बेचने वाले गांव के लोगों को पहले मुफ्त में पिलाने का काम करते हैं, पर जब इस की आदत पड़ जाती है तो लोग खरीद कर पीने लगते हैं.

बड़े पैमाने पर तस्करी

गांजे का इस्तेमाल बढ़ने से बड़ी मात्रा में इस की तस्करी भी बढ़ने लगी है. ओडिशा से सस्ते दाम पर गांजा खरीद कर दिल्ली समेत उत्तर प्रदेश के शहरों में बेचने वाले तस्कर गिरोह के 2 सदस्यों को भदोही पुलिस ने गिरफ्तार किया था. वाराणसीप्रयागराज रोड पर ऊंज थाना क्षेत्र में नवधव के पास से ट्रक में लदा 350 किलोग्राम गांजा बरामद किया था.

बरामद गांजे की कीमत 35 लाख रुपए आंकी गई थी. जिस ट्रक से गांजा बरामद किया गया, उस में टूटे हुए शीशे लदे थे. ट्रक के केबिन में गांजे को छिपा कर रखा गया था.

जागरुकता की जरुरत

लखनऊ के निगोहां थाने के क्षेत्राधिकारी नईम उल हसन कहते हैं, "यह देखा गया है कि नशे के रूप में गांजे का इस्तेमाल तेजी से बढ़ने लगा है, जिस की रोकथाम के लिए पुलिस के साथसाथ गांव के लोगों और समाज के खास लोगों को भी सामने आना पड़ेगा, तभी गांवों को गांजे के नशे से दूर रखा जा सकता है. गांव के लोगों को यह समझना होगा कि यह नशा सेहत के साथसाथ उन की सामाजिक इज्जत को भी नुकसान पहुंचा रहा है."

मोहनलालगंज संसदीय सीट के सांसद कौशल किशोर ने नशे के खिलाफ एक बड़ी मुहिम छेड़ी है. वे लोगों को नशा छोड़ने की शपथ दिलाते हैं. इस मुहिम में वे अपने क्षेत्र के साथसाथ पूरे देश में जागरूकता का संदेश दे रहे हैं.

कौशल किशोर कहते हैं, "किसी भी तरह की नशीली चीजों का सेवन सेहत के लिए खराब होता है. यह घरपरिवार को पूरी तरह से तबाह कर देता है. ऐसे में जरूरी है कि गांवगांव इस बात को ले कर जागरूकता मुहिम शुरू की जाए और लोगों को समझाया जाए."

अपराध है गांजे का सेवन

हमारे देश में हजारों सालों से गांजे का सेवन किया जा रहा है. इसे इंगलिश भाषा में कैनेबिस कहा जाता है. कैनेबिस के फूलों से ही गांजा बनाया जाता है. नशे के तौर पर अगर गांजे का सेवन करना छोड़ दिया जाए तो इस पौधे का इस्तेमाल कृषि, बागबानी, कपड़ा उद्योग, दवा और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में किया जाता है.

एक जानकारी के मुताबिक, 2 करोड़ लोग गांजे के पौधे से बने उत्पादों का इस्तेमाल नशे के तौर पर करते हैं.

गांजे को तंबाकू में मिला कर चिलम या हुक्के के जरीए लिया जाता है. नए

दौर में अब इस को कागज में लपेट कर तंबाकू के साथ सिगरेट जैसा बना कर भी लिया जाता है. शहरों में चलने वाले हुक्का बार में इस का इस्तेमाल हुक्का पीने में किया जाता है.

हाल के कुछ दिनों में गांव से ले कर शहर तक इस का चलन तेजी से बढ़ गया है. साल 1985 में राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री थे. उस समय से 'नार्कोटिक ड्रग्स ऐंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस ऐक्ट 1985' (एनडीपीएस ऐक्ट 1985) लागू हुआ था, जिस में गांजे को बैन कर दिया गया था. अब भारत में गांजे का इस्तेमाल करना और इसे बेचना पूरी तरह से बैन है. इस के बावजूद लोग चोरीछिपे इस का कारोबार और सेवन करते हैं

गांजे की खेती

गांजे के नर और मादा 2 पौधे होते हैं. नर पौधे की पत्तियों से भांग बनती है. मादा पौधे के फूल को सुखा कर गांजा बनाया जाता है. गांजे का सेवन करने पर लोगों में एक तरह का जोश सा बढ़ जाता है, क्योंकि यह तंबाकू के साथ मिला कर पीया जाता है. यह तेजी से असर करता है.

तंबाकू के साथ मिला कर गांजा पीने से कैंसर का खतरा बढ़ जाता है. जो लोग गांजे का ज्यादा और लगातार सेवन करते हैं, उन के चेहरे पर काले दाग पड़ जाते हैं.

अलगअलग रूपों में गांजे का सेवन पूरी दुनिया में होता है. हिमाचल प्रदेश के मलाना इलाके में उगने वाला गांजा दुनिया का सब से बेहतरीन गांजा माना जाता है.

गांजे की खेती जुलाई महीने के आसपास होती है, तब इस के पौधे को लगाया जाता है. 4 से 8 फुट तक इस का पौधा बढ़ता है.

गांजे के फूल को उलटपलट कर सुखाया जाता है. इसी से गांजा पाउडर तैयार किया जाता है.

अच्छी किस्म के गांजे में 15 से 25 फीसदी रेजिन और 15 फीसदी राख निकलती है. रेजिन को ही तंबाकू के साथ मिला कर पीने का काम किया जाता है.

सेहत के लिए खतरनाक

तंबाकू के साथ मिला कर गांजा पीने से दिमाग में कई तरह के बदलाव होने लगते हैं. कैनेबिस के पौधे में तकरीबन 150 तरह के कैनेबिनौइड पाए जाते हैं. कैनेबिनौइड एक तरह का कैमिकल होता है. 150 कैमिकलों में से 2 कैमिकल टैट्राहाइड्रोकैनाबिनौल (टीएचसी) और कैनेबिडौल (सीबीडी) ऐसे भी होते हैं, जो दिमाग पर सब से ज्यादा असर डालते हैं.

गांजे में पाए जाने वाले ये दोनों कैमिकल यानी टीएचसी और सीबीडी अलगअलग काम करते हैं. टीएचसी जहां एक तरफ नशा बढ़ाता है, तो वहीं दूसरी तरफ सीबीडी नशे के असर को कम करता है. जब गांजे में टीएचसी की मात्रा ज्यादा होती है, तो टीएचसी खून के साथ दिमाग तक पहुंच जाता है और गड़बड़ करने लगता है.

यह दिमाग में काम करने वाले न्यूरौन पर असर डालता है. गांजा पीने के बाद न्यूरौन ही कंट्रोल से बाहर हो जाता है. कैनेबिडौल का इस्तेमाल दवाएं बनाने में किया जाता है.

गांजा पीने के बाद जब हमारा दिमाग बेकाबू हो जाता है, तो लोगों को बेशक मजा सा आता है, लेकिन इस का खराब असर ही पड़ता है. धीरेधीरे नशेड़ी कोई बात ज्यादा देर तक याद नहीं रख पाते हैं. उन का दिमागी बैलेंस खराब होने लगता है. डिप्रैशन बढ़ने लगता है. कैंसर का खतरा बढ़ जाता है.

जो लड़कियां गांजे का सेवन करने लगती हैं, वे अपनी बच्चा जनने की ताकत खोने लगती हैं. माहवारी में दिक्कतें होने लगती हैं. हमेशा नशा करने का मन होता है. नशा पाने की बेचैनी में वे कुछ भी करने को तैयार हो जाती हैं.

यही नहीं, खुद पर काबू न रख पाना ही नशा करने का सब से बड़ा नुकसान है. करता कोई एक है और भुगतता पूरा परिवार है. ●

Dhanwantri
Divine-9

क्या आपके साथ ऐसा तो नही ?

★ जल्दी-जल्दी जुकाम या गला खराब होता है ★ शरीर में कमजोरी बनी रहती है या वजन घट रहा हो
★ एलर्जी, बुखार और इन्फैक्शन शीघ्र होता हो ★ जल्दी-जल्दी पेट खराब होता हो।

ये सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण हो सकते हैं।

Divine-9™
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

एक आयुर्वेदिक औषधि है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने में सहायक है, सोचना आपको है कि रोगों से लड़ना है या रोगों से घिरे रहना है।

मिलिए मेरी नई फैमिली से
जो रहे फिट हमेशा

2007 से ही अश्वगंधा, गिलोय व तुलसी औषधि Divine-9 में पहले से ही मौजूद है।

सन् 1921 से हमारे प्रसिद्ध अन्य उत्पाद सुन्दरी सुधा, स्वर्ण मधु, पाचन अमृत सुधा।

वितरक रहित क्षेत्रों में वितरक बनने हेतु सम्पर्क करें - 09258040152, 05921250052

निर्माताः धन्वंतरि फार्मास्युटिकल, काशीपुर (उत्तराखण्ड) मो0 : 07618570252, 09412245652

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

Bhagyashree
Actress

हेल्पलाइन नं. 9358256552

परफैक्ट बैंक रौबरी

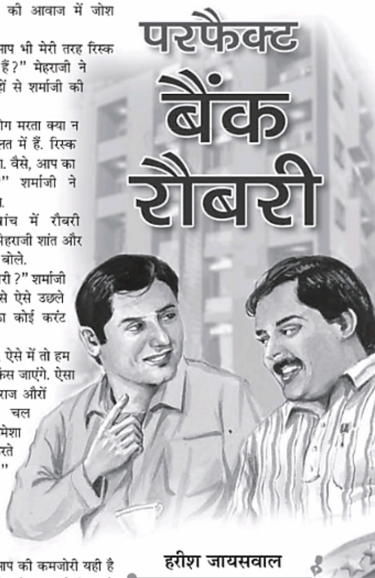

हरीश जायसवाल

"अरे क्या बात हुई रघुनंदन शर्माजी, बड़े परेशान नजर आ रहे हैं?" बैंक मैनेजर ओपी मेहरा ने कैशियर से पूछा.

"सर, वह हैड औफिस से जो ईमेल आया है, उसे देखा आप ने?" शर्माजी अपने माथे पर आए पसीने को पोंछते हुए बोले.

"नहीं, मैं दूसरे अकाउंट में बिजी था. जिस तरह से आप परेशान हैं, उसे देख कर तो लगता है कि कोई गंभीर बात है," मेहराजी मुसकराते हुए बोले.

"सर, उस में लिखा है कि 20 मार्च से हमारा एन्युअल आडिट चालू होगा," शर्माजी की आवाज में घबराहट सी थी.

"तो उस में कौन सी नई बात है शर्माजी? आडिट तो हर साल ही होता है न?" मेहराजी के चेहरे पर हलकी सी मुसकान अभी भी कायम थी.

"मेहराजी, या तो आप सचमुच भूल गए हैं या फिर भूलने का नाटक कर रहे हैं. याद है, आप ने और मैं ने पिछले साल इन्हीं दिनों में यहीं पर बैठ कर यह योजना बनाई थी कि आप के बेटे राज और मेरे बेटे सुनीति कुमार को बेहतर भविष्य बनाने के लिए विदेश भेज देना चाहिए.

"इसी सिलसिले में हम ने कई एजेंटों से बात भी की थी. आखिरकार पिछले साल जून में हम ने एक नामी एजेंट से बात कर सबकुछ पक्का भी कर लिया था. उस ने यह शर्त रखी थी कि अगर एक हफ्ते के भीतर दोनों बच्चों के लिए 15-15 लाख रुपए जमा करवा दें, तो वह उन के एडमिशन की कार्यवाही चालू कर देगा.

"उस ने हमें यह भी बताया था कि अगर हम तुरंत पैसा दे देते हैं, तो वह वीजा समेत सारे कागजात तत्काल बनवा देगा और दोनों बच्चे अक्तूबर के महीने से भाषा प्रवीणता क्लासेस जौयन कर अगले साल से नियमित कोर्स कर पाएंगे.

"हम दोनों पर ही पहले से 2-2 विभागीय लोन चल रहे हैं, ऐसे में तुरंत तीसरा लोन मिलना मुमकिन नहीं होगा. तब आप ने सुझाया था कि अभी हम बैंक के कैश में से पैसा निकाल कर फीस भर देते हैं, भविष्य में जैसे ही ब्रांच के पास होम लोन, व्हीकल लोन या बिजनैस लोन के लिए प्रपोजल आते हैं, तो हम उन में प्रोसैसिंग ऐंड डाक्यूमैंटेशन फीस के नाम पर लाख 2 लाख रुपए हर प्रपोजल में एडजस्ट करते रहेंगे.

"इस तरह बैंक को उस के पैसों का अच्छाखासा ब्याज मिल जाएगा और हमारा काम भी हो जाएगा. मेरे खयाल से 20-25 केस में सारा अमाउंट एडजस्ट हो जाएगा.

"पर, कोरोना और लौकडाउन के चलते न तो हमें मनमुताबिक कस्टमर ही मिल पाए, न ही बैन के चलते हमारे बच्चे ही विदेश जा पाए. अगले 10 दिनों में इतनी बड़ी रकम का इंतजाम करना नामुमकिन है," यह सब कहते हुए शर्माजी का चेहरा लाल हो गया और सांसें भी तेज चलने लगीं.

"हां शर्माजी, मेरे दिमाग से तो यह बात एकदम से निकल ही गई थी. अब अगर आडिट हो गया तो हम बुरी तरह से फंस जाएंगे," अब मेहराजी के चेहरे पर भी शिकन आने लगी थी.

"अगर आडिट पार्टी ने पकड़ लिया, तो नौकरी तो जाएगी ही, साथ ही साथ भविष्य निधि में जो पैसा है, उसे भी जब्त कर लिया जाएगा," यह सब कहते समय शर्माजी के माथे पर दोबारा पसीने की बूंदें चमकने लगीं.

"कुछ तो करना ही पड़ेगा," मेहराजी सोचते हुए बोले.

"जल्दी कीजिए मेहराजी, कहीं ऐसा न हो सोचतेसोचते ही सारा समय निकल जाए," शर्माजी परेशान होते हुए बोले.

"अगर पुराना समय होता, तो बैंक में आग ही लगवा देते और सब रिकौर्ड जलवा देते, मगर इस समय तो पलपल की रिपोर्ट कंप्यूटर के जरीए कई जगह पहुंच जाती है," मेहराजी ने कहा.

"आज की बातें कीजिए सर. आज इस समस्या से कैसे छुटकारा पाया जाए..." शर्माजी की आवाज में घबराहट बरकरार थी.

"रात को आप भी सोचिए और मैं भी सोचता हूं. कोई न कोई हल जरूर ही निकल जाएगा," मेहराजी उठे और अपना केबिन लौक करते हुए बोले.

"आज तो रातभर नींद ही नहीं आई. आंखों में आडिट पार्टी ही दिखाई देती रही," जैसे ही अगले दिन मेहराजी केबिन का लौक खोल कर अंदर घुसे, तो शर्माजी भी पीछेपीछे आ गए और घबराती हुई आवाज में बोले.

"परेशान तो मैं भी रहा रातभर..." मेहराजी बोले, "कोई हल सूझा क्या?"

"अगर हल मिल जाता तो मैं इस तरह आप के पीछेपीछे नहीं आता," शर्माजी को लगा, शायद मेहराजी उन का मजाक उड़ा रहे हैं, फिर मौके की नजाकत को देखते हुए वे कुछ नरम आवाज में बोले, "आप के दिमाग में कोई आइडिया आया क्या?"

"हां, आया तो है, मगर रिस्क लेना होगा," मेहराजी की गंभीर आवाज में चेतावनी थी.

"अजी साहब, नौकरी सलामत रहे तो कितना भी बड़ा रिस्क क्यों न हो ले लेंगे," कुछ उम्मीद की किरण दिखाई दी, तो शर्माजी की आवाज में जोश आ गया.

"मतलब, आप भी मेरी तरह रिस्क लेने को तैयार हैं?" मेहराजी ने सवालिया निगाहों से शर्माजी की तरफ देखा.

"हां, हम लोग मरता क्या न करता वाली हालत में हैं. रिस्क तो लेना ही पड़ेगा. वैसे, आप का हल है क्या?" शर्माजी ने उत्सुकता से पूछा.

"रौबरी, ब्रांच में रौबरी करानी होगी," मेहराजी शांत और सधी आवाज में बोले.

"क्या... रौबरी?" शर्माजी एकदम कुरसी से ऐसे उछले जैसे बिजली का कोई करंट लग गया हो.

"अरे साहब, ऐसे में तो हम और भी ज्यादा फंस जाएंगे. ऐसा करने से हमारा राज औरों को भी पता चल जाएगा और वे हमेशा हमें ब्लैकमेल करते रहेंगे, सो अलग," शर्माजी की घबराहट अब और भी ज्यादा बढ़ गई थी.

"शर्माजी, आप की कमजोरी यही है कि आप बात को पूरी तरह सुने बिना ही उस पर राय देने लगते हैं. अरे भाई, पहले योजना तो सुन लीजिए. अगर कुछ कमी होगी, तो उसे भी हम फुलप्रूफ कर लेंगे," मेहराजी बोले.

"अच्छाअच्छा, योजना बताइए," शर्माजी अनमने मन से बोले. उन के हावभाव से साफ दिख रहा था कि वे इस तरह का हल कतई नहीं चाहते थे.

"मुझे एक बात बताइए शर्माजी, यह सब बखेड़ा, झूठसच हम लोगों ने किया किस के लिए, बताइएबताइए..." मेहराजी ने जोर दे कर पूछा.

"अपने बच्चों के लिए," शर्माजी बुझी हुई आवाज में बोले.

"तो क्या उन बच्चों की जवाबदारी नहीं है कि वे हमें आज इस मुसीबत से बचाएं. वैसे भी इस वारदात को हम इस तरह से अंजाम देंगे कि कोई हम पर शक करेगा ही नहीं," मेहराजी फुसफुसाती आवाज में बोले.

"मतलब, लूट की इस करतूत को हमारे बच्चे अंजाम देंगे?" शर्माजी बातों का मतलब समझते हुए बोले.

"सौ फीसदी सही. यही योजना है हमारी. और मैं ने इस बारे में अपने बेटे राज से भी बात कर ली है. राज तो मान गया है. आप भी अपने दोनों लड़कों सुनीति कुमार और सुकर्म कुमार से बात कर उन्हें समझाइए. अगर वे न समझें, तो रात को मेरे पास ले कर आइए.

"उन के विदेश जाने की योजना तभी पूरी हो पाएगी, जब हम बाहर और उन के साथ होंगे. आप को उन्हें इसी हकीकत को समझाना होगा," मेहराजी योजना का खुलासा करते हुए बोले.

"साहब, यह तो बहुत बड़ा रिस्क होगा. कोई दूसरा जुगाड़ नहीं हो सकता?" शर्माजी ने हताश आवाज में पूछा.

"लाइए, अपने हिस्से के 15 लाख रुपए, मैं भी कहीं से मांगता हूं या अपनी बीवी के गहने गिरवी रखता हूं. मगर इतनी बड़ी रकम का इंतजाम इतनी जल्दी भी नहीं होगा," मेहराजी बोले.

"मगर, जो पैसा हम ने यहां से निकाला था, वह तो हम विदेश भेजने वाले कंसलटैंट को दे चुके हैं. अगर उस से पैसा वापस मांगते हैं, तो वह 50 परसैंट से भी कम वापस करेगा और बच्चों को विदेश भेजने का मिशन भी पूरा नहीं होगा," मजबूर और निराश आवाज में शर्माजी ने कहा.

"इसीलिए तो मैं कहता हूं शर्माजी कि बचाव का सब से बढ़िया रास्ता है

हमला. अगर कोई कोशिश ही नहीं की गई, तो हम पक्का पकड़े जाएंगे और उस सूरत में हम बच्चों को कभी भी बेहतर भविष्य नहीं दे पाएंगे.

"अभी बस थोड़ी सी हिम्मत करनी है, तभी आगे का भविष्य सुखद होगा," मेहराजी अपने शब्दों में शहद सी मिठास घोलते हुए बोले, "और फिर बच्चे अकेले थोड़े ही हैं, हम भी तो हैं उन के पीछे."

"बताइए क्या योजना है? जब ओखली में सिर दे ही दिया है तो मूसली से क्या डरना," मेहराजी की बातों से शर्माजी का हौसला बढ़ गया था.

"यह हुई न मर्दों वाली बात. देखिए, इस समय हमारे इलाके में लौकडाउन चल रहा है. ग्राहकों की भीड़ वैसे भी नहीं है. ऊपर से हम 50 परसैंट स्टाफ के साथ ही काम कर रहे हैं. मतलब, 6 लोगों की जगह पर सिर्फ 3 लोग.

"आप ब्रांच के एकलौते कैशियर और मैं मैनेजर... मतलब, हम दोनों को तो रोज आना ही है. तीसरा स्टाफ वारदात वाले दिन ऐसा रखेंगे, जो एकदम से नया हो. मेरे विचार से जो नई मैडम आई हैं, उन की बारी परसों है, इसलिए इस योजना को अंजाम परसों ही दिया जाएगा.

"अभी जो एकमात्र सिक्योरिटी गार्ड है, वह चाय बनाने और हम लोगों को पानी पिलाने का काम भी खुशीखुशी कर देता है. परसों भी जब सिक्योरिटी गार्ड शाम को 4 बजे चाय बनाने के लिए जाएगा, उसी समय इस वारदात को अंजाम दिया जाएगा. कुलमिला कर 10 से 15 मिनट में सब काम हो जाएगा.

"रही बात पुलिस की, तो वह तो उसी आधार पर चलेगी, जो हम बयान देंगे. 30 लाख तो हमारा हो ही जाएगा एकदम कानूनी तरीके से और लूट में जो पैसा मिलेगा, वह आधाआधा कर लेंगे.

"इसे कहते हैं हींग लगे न फिटकरी और रंग भी चोखा आए," कहते हुए मेहराजी मुसकराने लगे.

"वाह, योजना तो शानदार लगती है. मुझे बिंदुवार समझाइए कि कबकब, क्याक्या करना है," शर्माजी रजामंदी में सिर हिलाते हुए बोले.

"यह हुई न कुछ बात. वैसे भी लौकडाउन चल रहा है तो बाजार बंद है, सड़कें सुनसान हैं और इसी के चलते हमारा काम ज्यादा आसान है.

"हम लोग रोजाना की तरह नियमित समय पर ही आएंगे. कस्टमर्स के लिए ट्रांजैक्शन दोपहर को 3 बजे बंद कर देंगे, मतलब ज्यादा से ज्यादा साढ़े 3 बजे तक ब्रांच में हम 4 ही लोग होंगे. आप, मैं, मैडम और सिक्योरिटी गार्ड.

"मैं शाम 4 बजे रोजाना की तरह सिक्योरिटी गार्ड को चाय बनाने के लिए बोलूंगा. जाहिर है कि इस समय मतलब 4 बजे ब्रांच का ऐंट्री गेट सूना रहेगा और आनेजाने वालों पर कोई रोकटोक नहीं रहेगी.

"ठीक इसी समय मैं अपने लड़के राज को फोन करूंगा और पूछूंगा कि शाम को खाने में क्या बन रहा है? असलियत में यह उन तीनों के लिए संकेत होगा कि वारदात को अंजाम देने के लिए रास्ता साफ है.

"यहां पर सोने पे सुहागा यह कि ब्रांच की यह बिल्डिंग अंडरकंस्ट्रक्शन है और बेसमैंट की पार्किंग में अभी तक न कोई गार्ड है, न कोई सीसीटीवी कैमरे ही लगे हैं. यहां पर वे तीनों मोटरसाइकिल से पहले ही पहुंच चुके होंगे.

"कोरोना हमारे लिए एक बार फिर वरदान बनेगा, क्योंकि सभी लोगों को इस से बचाव के लिए मास्क लगाना जरूरी है. इस से आधा चेहरा तो कवर हो ही जाता है, बाकी का भाग पार्किंग में आ कर रूमाल से कवर करना है.

"मेरे पास एक लाइसैंसी रिवाल्वर है और 2 गुप्तियां भी हैं, जो राज अपने साथ लेता आएगा और आप के लड़कों को दे देगा. इस के बाद मेरा इशारा मिलते ही वे तीनों ब्रांच में घुस जाएंगे और पूरी घटना को अपने अंजाम तक पहुंचा देंगे.

"चूंकि आप के दोनों बेटे एक ही मोटरसाइकिल पर आएंगे, इसलिए रुपयों से भरा बैग ले कर दोनों जाएंगे और बाद में हम पैसा आधाआधा बांट लेंगे.

"अभी जो कैश विड्रा का ट्रैंड चल रहा है, उस के अनुसार औसतन 2 लाख रुपए रोज की निकासी हो रही है. आज हमारे पास तकरीबन 18 लाख रुपए हैं. इस का मतलब उस दिन तकरीबन 14 लाख रुपयों की लूट होगी, जिसे हमें 44 लाख रुपए दिखाना है," मेहराजी अच्छी तरह समझाते हुए बोले.

"यहां तक तो बिलकुल ठीक है, मगर इस पर ऐक्शन कैसे होगा?" शर्माजी ने पूछा.

"मेरा इशारा पाते ही तीनों बच्चे ब्रांच में घुस जाएंगे और राज मेरे माथे पर रिवाल्वर रख कर आप तीनों को हाईजैक कर के एक केबिन में बंद कर देगा, फिर 2 लोग मुझे स्ट्रांगरूम में ले जाएंगे और पासवर्ड के जरीए उसे खुलवा कर सारा कैश अपने हवाले कर लेंगे.

"ऐसा ही कुछ वे लोग आप के साथ भी कर के कैश बौक्स भी लूट लेंगे. हमारे पास पूरा हिसाब होगा ही, इसलिए मौका मिलते ही मेरा हिस्सा मुझ तक पहुंचा देना," मेहराजी बोले.

"बहुत खूब मेहराजी. एकदम परफैक्ट प्लानिंग है. इस से हमारे पिछले पाप तो धुल ही जाएंगे और खर्चे के लिए कुछ पैसे हाथ में भी आ जाएंगे," शर्माजी तारीफ करते हुए बोले.

और तय दिन को योजना के मुताबिक बैंक लूट लिया गया. कुल लूट की रकम 46 लाख रुपए से ज्यादा दिखाई गई.

"बधाई हो मेहरा साहब, आप की परफैक्ट प्लानिंग काम कर गई और हमारा मिशन पूरा हुआ," वारदात के 2 दिन बाद शर्माजी गर्मजोशी से मेहराजी से हाथ मिलाते हुए बोले.

"शर्माजी, जरा धीरे बोलिए, दीवारों के भी कान होते हैं," मेहराजी जीते हुए खिलाड़ी की तरह मुसकराते हुए बोले.

"दीवारों के सिर्फ कान ही नहीं होते, बल्कि आंख, नाक, मुंह और हाथों में हथकड़ियां पहनाने के लिए हाथ सभी कुछ होते हैं," पुलिस इंस्पैक्टर मेहराजी के केबिन में दाखिल होते हुए बोला.

"क्या मतलब है आप का?" मेहराजी अचकचाते हुए बोले.

"मतलब यह कि मेहराजी, प्रोफैशनल क्रिमिनल भी गलती कर देते हैं, फिर तो आप अभी नौसिखिया ही हैं," इंस्पैक्टर बोला.

"गलती? कौन सी गलती?" मेहराजी ने हैरान होते हुए पूछा.

"बहुत ज्यादा आत्मविश्वास इनसान को गलतियां करने पर मजबूर कर देता है. आप के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ मिस्टर मेहरा. आप शुरू से ही यह मान कर चल रहे थे कि आप का प्लान फुलप्रूफ है और आप को कोई पकड़ नहीं सकता.

"हकीकत में यह प्लान था भी बहुत जोरदार और शुरू में तो हम पुलिस वाले भी गच्चा खा गए थे, लेकिन आप की जल्दबाजी और हद से ज्यादा आत्मविश्वास ने आप को एक नहीं, बल्कि 3-3 गलतियां करने के लिए मजबूर कर दिया.

"गलती नंबर एक यह कि आप ने अपने हैड औफिस को तुरंत सूचना देने के चक्कर में इस वारदात का ड्राफ्ट दोपहर को 12 बजे ही कंप्यूटर में तैयार कर लिया था.

"वह कहते हैं न कि मशीनों का दिल, दिमाग और जबान नहीं होता, इस वजह से वे न बोलते हुए भी सबकुछ बोल देती हैं. आप का यह ड्राफ्ट भी कंप्यूटर में दोपहर को 12 बजे ही सेव हो गया था.

"दूसरी गलती यह कि आप ने उम्मीद की थी कि ट्रांजैक्शन नियमित ट्रैंड के मुताबिक तकरीबन 2 लाख रुपए तक का ही होगा, मगर उस दिन ट्रांजैक्शन बहुत कम हुआ.

"आप ने अपने ड्राफ्ट में 44 लाख रुपयों की लूट की सूचना दी, जबकि असली अमाउंट 46 लाख रुपयों से ज्यादा का था. यहां पर पुलिस को दिए गए बयान और हैड औफिस को दी गई सूचना में फर्क पाया गया, जिस से हमारा शक बढ़ गया.

"तीसरी गलती यह कि जैसे ही प्रायोजित लुटेरे बैंक लूटने पहुंचे, आप ने बिना किसी विरोध के अपने हाथ ऊपर कर दिए और लुटेरों के कहे बिना ही स्ट्रांगरूम की तरफ चले गए.

"ऐसा शायद बापबेटों के रिश्तों के चलते हुआ, वरना तो लुटेरे आते ही सब से पहले मारपीट कर आतंक मचाते हैं, फिर वारदात को अंजाम देते हैं.

"गलती तो शर्माजी आप ने भी की. आप ने सोचा कि आप के बेटों की उम्र इतनी नहीं है कि वे इतनी बड़ी रकम को मोटरसाइकिल पर महफूज तरीके से ले जा सकेंगे और यही वजह रही कि वे लोग आए तो मोटरसाइकिल से, मगर गए आप की कार से.

"शायद आप भूल गए थे कि उस दिन सुबह जब बैंक आए थे, तो अपनी पानी की बोतल कार में ही भूल गए थे, जिसे लेने सिक्योरिटी गार्ड पार्किंग में गया था.

"उसी सिक्योरिटी गार्ड ने जब आप को मोटरसाइकिल से घर वापस जाते देखा तो इस की सूचना पुलिस को दे दी.

"इन्हीं सब चीजों के तार जोड़ने में 2 दिन का समय लगा और आप ने समझा कि आप की बैंक रौबरी परफैक्ट हो गई है.

"चलिए, आप लोगों के बेटे थाने में आप का इंतजार कर रहे हैं. उन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया है," इंस्पैक्टर ने तफसील से सबकुछ बताया. ●

भोजपुरी परदा :

मैं फैंस की चाहत को पूरा करने का मौका देती हूं

- किरन यादव

बृहस्पति कुमार पांडेय

भोजपुरी सिनेमा में कुछ चेहरे ऐसे हैं, जो भोजपुरी बैल्ट के हर दिल में जगह बनाने में कामयाब रहे हैं. उन्हीं में से एक नाम है किरन यादव का.

किरन यादव को भोजपुरी सिनेमा में मां के रूप में जाना जाता है. उन्होंने अब तक जितनी भी फिल्मों में काम किया है, उन सभी फिल्मों ने कामयाबी के झंडे गाड़े हैं. भोजपुरी फिल्म 'कल्लू की दुलहनिया' के सैट पर उन से हुई एक मुलाकात में उन के फिल्म कैरियर पर लंबी बातचीत हुई. पेश हैं, उसी के खास अंश :

आप अपने फिल्म कैरियर की शुरुआत से पहले आकाशवाणी से लंबे समय तक जुड़ी रही थीं, फिर अचानक आप का फिल्मों की तरफ रुख कैसे हुआ?

आप ने सही कहा. मैं ने काफी समय तक वाराणसी आकाशवाणी में काम किया था, लेकिन फिर मुझे दूरदर्शन वाराणसी में बतौर ड्रामा आर्टिस्ट के तौर पर चुना गया था. उसी दौरान भोजपुरी फिल्मों के पितामह कुणाल सिंह भोजपुरी भाषा में फिल्म 'कन्यादान' बना रहे थे, जिस में लीड रोल में रविकिशन थे.

इस फिल्म में मुझे बहुत ही छोटा सा दाई का रोल करने को मिला था, जिसे मैं ने बड़ी शिद्दत से निभाया था. फिल्म मेकर्स को मेरा रोल काफी पसंद आया था. इस फिल्म के बाद मुझे फिल्म 'दारोगा बाबू आई लव यू' में मनोज तिवारी की मां का रोल निभाने को मिला था.

आप ज्यादातर फिल्मों में मां के रोल में नजर आती हैं. एक ही जैसे रोल में बंध जाने की कोई खास वजह?

मुझे खुद नहीं पता था कि मेरी पहचान भोजपुरी फिल्मों की मां के रूप में हो जाएगी, लेकिन सच कहूं तो जब दर्शक अलगअलग फिल्मों में किए गए मेरे मां के रोल को सराहते हैं, तो मुझे बहुत ज्यादा खुशी मिलती है.

आप के चाहने वाले आप की तुलना बौलीवुड की बड़ी कलाकार निरूपा राय और राखी से करते हैं, तो आप को कैसा महसूस होता है?

यह मेरे लिए खुशी की बात है कि लोग मेरी तुलना निरूपा राय या राखी के साथ करते हैं. लेकिन मुझे और भी ज्यादा खुशी तब होगी, जब लोग किरन यादव के मां के रोल की तुलना दूसरी महिला कलाकारों के लिए भी करना शुरू करेंगे.

आप मां के रूप में अलगअलग किरदारों में कैसे खुद को ढाल पाती हैं?

यह तो फिल्म की कहानी तय करती है कि मैं फिल्म में किस तरह की मां के रोल में नजर आती हूं. फिल्मों की कहानी ने कभी मुझे कुटिल सौतेली मां के रूप में पेश किया है, तो कभी संवेदनशील और संघर्ष करने वाली मां के रूप में.

आप को सब से ज्यादा हीरो दिनेशलाल यादव 'निरहुआ' की फिल्मों में मां के रोल में देखा गया है. इस की कोई खास वजह?

कोई खास वजह नहीं रही है. हां, यह जरूर है कि दर्शक मुझे दिनेशलाल यादव की मां के रूप में देखना ज्यादा पसंद करते हैं.

क्या आप को भोजपुरी के अलावा कभी हिंदी फिल्मों में भी काम करने का मौका मिला है?

जी हां, मैं ने फिल्म 'गैंग्स औफ वासेपुर' में काम किया है. इस के अलावा मेरे पास कई हिंदी फिल्में और भी हैं.

आप सरकारी स्कूल में टीचर भी हैं, फिर एकसाथ 2-2 जिम्मेदारियां कैसे निभा लेती हैं?

मैं खुद के हर काम को टाइम टेबल के हिसाब से फिक्स रखती हूं. मेरी कोशिश होती है कि स्कूल की छुट्टियों का इस्तेमाल ही फिल्मों में शूटिंग के दौरान करूं, पर कभीकभी स्कूल से छुट्टियां भी लेनी पड़ती हैं.

कहा जाता है कि आप के ऐक्टिंग कैरियर को चुनने में आप के पति का बहुत बड़ा रोल रहा है. इस बात में कितनी सचाई है?

मेरी शादी कम उम्र में ही हो गई थी. जब मैं यहां ब्याह कर आई, तो उन्होंने मेरी आवाज सुन कर मुझे आकाशवाणी में काम करने की सलाह दी, जिस को मान कर मैं ने शुरुआत की.

भोजपुरी सिनेमा में इन दिनों काफी लोग कलाकार बनने की आस लिए आ रहे हैं. आप का क्या मानना है कि ऐसे लोगों को मौका मिलना चाहिए?

बिलकुल मिलना चाहिए, क्योंकि अगर नए कलाकारों को मौका नहीं मिलता है तो जो प्रतिभाएं हैं, वे दब जाती हैं. नए लोगों को मौका मिलने से एक ही इनसान का दबदबा नहीं हो पाता है.

आप अपने फिल्म स्टारडम को कैसे ऐंजौय करती हैं?

जब मैं कहीं शूटिंग पर होती हूं, तो अपने फैंस को देखती हूं कि वे मेरी एक झलक पाने के लिए अपने मोबाइल में सैल्फी उतारने के लिए कितने बेताब होते हैं. मैं भी उन की चाहत को पूरा करने के लिए शूटिंग के दौरान सैल्फी लेने के मौके देती रहती हूं.

फिल्म 'कल्लू की दुलहनिया' में दूसरी फिल्मों से अलग क्या खास होगा?

यह बेहद ही मजेदार फैमिली ड्रामा और कौमेडी फिल्म है. इस फिल्म में अरविंद अकेला 'कल्लू' के साथ निधि झा, पूनम दुबे, जोया खान, मणि भट्टाचार्य, सोनालिका प्रसाद समेत 7 हीरोइनें इश्क फरमाते नजर आने वाली हैं. इस फिल्म से मुझे काफी उम्मीद है. ●

सच्ची सलाह

मैं एक 19 साल की लड़की हूं और पढ़ाई में बहुत अच्छी हूं. मैं एक लड़के को बहुत पसंद करती हूं, पर उस की एक गंदी आदत है कि वह नशा करता है. सिगरेट में कुछ भर कर पीता है और फिर बेसुध हो जाता है.

मैं ने उसे कई बार अपने प्यार का वास्ता दिया, पर वह नहीं सुनता है. मैं उसे खोना नहीं चाहती हूं. मैं क्या करूं?

आप तुरंत उस लड़के को छोड़ दें. एक नशेड़ी से प्यार करने पर आप को सिवा दुश्वारियों के कुछ और नहीं मिलेगा. अगर वह वाकई आप को प्यार करता होता तो आप की खातिर नशा छोड़ चुका होता.

आप उस से कहें कि मुझे या नशे में से किसी एक को चुन लो तो वह बातें तो बड़ीबड़ी करेगा, आप के लिए चांदतारे तोड़ लाने के वादे करेगा, लेकिन नशा न छोड़ पाए तो समझ लें कि उस का भविष्य क्या होगा.

बेहतर होगा कि आप धीरेधीरे उस से किनारा कर लें. उसे पा कर भी खो दें, इस से तो बेहतर है कि उसे बिना पाए ही खो दें, जो कि अभी मुमकिन है.

●

मेरी अभी सगाई हुई है. एक दिन मैं ससुराल गया था, तो मेरी मंगेतर का बौयफ्रैंड वहां आ गया. वह मुझे छोड़ कर दूसरे कमरे में बौयफ्रैंड से डेढ़ घंटे तक बातें करती रही. उस की हरकत मुझे अजीब लगी. मैं ने उस से पूछा, तो वह मेरी बात को टाल गई. मुझे क्या करना चाहिए?

आप की मंगेतर का रवैया वाकई अटपटा लगने वाला है. गनीमत है कि अभी आप की शादी नहीं हुई है, इसलिए आप खुल कर पूछ सकते हैं कि आखिर माजरा क्या है? उस से साफसाफ कह दें कि आप को ऐसी हरकत पसंद नहीं. अगर उसे अपना बौयफ्रैंड ही ज्यादा पसंद है, तो बेहतर होगा कि वह आप के बजाय उसी से शादी कर ले.

●

मैं 25 साल का हूं. मेरी शादी को 2 साल हो चुके हैं. एक बच्चा भी है. मुझ में और मेरी बीवी में बहुत प्यार है, मगर काम से घर लौटने में जरा सी देरी होने पर वह नाराज हो जाती है. मुझ से कई तरह के सवाल करती है, जिन का कोई मतलब नहीं होता. मैं क्या करूं?

नईनई शादी में बीवी चाहती है कि पति हर वक्त उस के पास रहे. आप की बीवी की नाराजगी भी उस का प्यार ही है. आप उसे प्यार से समझाएं कि काम में थोड़ी देर हो ही जाती है. इस के अलावा आप जल्दी से जल्दी आने की कोशिश किया करें. वक्त के साथ बीवी गुस्सा करना छोड़ देगी. ●

Divisa

NO. 1 BRAND
INDIA 2016

No More CONSTIPATION!

If you are suffering from Constipation, Gas or Acidity, then use 'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.

Raju Srivastav

20% EXTRA
Divisa
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Ayurvedic Proprietary Medicine
Safe for daily use

- CONSTIPATION
- ACIDITY
- GAS

Dr. Juneja's ®

पेट सफा

Natural Laxative Granules & Tablets

24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com
Available at all medical & general stores

20% EXTRA
पेट सफा

जवान झींगुरी

जीतेंद्र मोहन भटनागर

खेलावन मिस्त्री अपनी दोनों पत्नियों और 15 साल की किसनी व 10 साल की झींगुरी को छोड़ कर ज्यादा रुपए कमाने के चक्कर में शहर जा कर ठेकेदारी करने लगा था.

किसनी उस की पहली पत्नी मानकी की औलाद थी और झींगुरी को तो नाजायज तौर पर मानकी की सगी बहन जानकी की कोख में आ जाने के चलते जन्म लेना पड़ा था.

आज से तकरीबन 11 साल पहले 20 साल की जानकी अपनी गंभीर रूप से बीमार उस से 10 साल बड़ी बहन मानकी की सेवा करने आई थी और जाने कब खेलावन ने उस से टांका भिड़ा कर पेट से कर दिया था... वह खेलावन की दूसरी पत्नी बन कर रह गई थी.

दरअसल, खेलावन होशियार, लेकिन रसिकमिजाज था. कई मौकों पर वह गांव की मजदूरिनों से भी टांका भिड़ाते हुए पकड़ा जा चुका था.

बस एक काम उस ने जिंदगी में अच्छा किया था, जब इस गांव से सटे नहर के उस पार वाले गांव में एक सेठ के आलीशान भवन को अपने कुशल हाथों से बनाते हुए बड़ी मनौती के बाद पैदा हुए एकलौते बेटे को डाकुओं के चंगुल से बचाया था.

यह तो सेठ के 4 साल के उस बेटे का भाग्य था, जो उस भवन की स्लैब डालने में बहुत रात हो गई थी और खेलावन अपनी पूरी मजदूर टीम के साथ उस बनती हुई इमारत के नीचे कमरे में रुक कर सोने के लिए लेटा ही था कि सेठ की पास वाली पुरानी हवेली से सेठानी के रोनेचिल्लाने की आवाज आने लगी, 'अरे, डाकू सारा माल लूट कर ले जा रहे हैं. बच्चे को भी उठा कर ले गए... कोई मेरे बच्चे को बचाओ...'

खतरे को भांपते हुए खेलावन ने आसपास सोए सभी मजदूरों और साथ वाले सहायक मिस्त्रियों को तेजी से उठाया और पीछे के छोटे रास्ते से आगेआगे दौड़ता हुआ उस मोड़ पर पहुंच गया, जहां उस के अंदाजे के मुताबिक डाकू पहुंचने वाले थे.

वे डाकू 5 या 6 रहे होंगे. उन में से कुछ तो आगे निकल गए थे, और जो 2 पीछे रह गए थे उन में से एक डाकू की गोद में बच्चा था.

खेलावन के हत्थे वही चढ़ा. बच्चे को तो उस ने छुड़ा कर अपनी गोद में ले लिया, पर उन दोनों को इसलिए दबोच नहीं पाया कि आगे गए हुए उन के साथियों ने गोलियां चलानी शुरू कर दी थीं. इसी बीच मौके का फायदा उठा कर वे दोनों डाकू भी भाग खड़े हुए थे.

सेठानी को बच्चा थमाते हुए खेलावन बोला था, 'हमें अफसोस है कि हम डाकुओं को पकड़ नहीं पाए, वरना डकैती में गया सामान भी मिल जाता.'

'खेलावन, माल चला गया, कोई बात नहीं, हम फिर कमा लेंगे, पर हमारा लाड़ला चला जाता तो हमारा सबकुछ चला जाता,' सेठ ने कहा था.

जब पूरा भवन मजबूती के साथ खड़ा हो गया, तो सेठानी ने उस बच्चे के हाथों से छुआ कर सब मजदूरों के साथ खेलावन को भी खूब इनाम दिया था.

खेलावन के दिन ऐसे ही बीत रहे थे. झींगुरी भी उस डकैती वाले हादसे के कुछ ही महीनों बाद इस संसार में आ चुकी थी.

देखते ही देखते वह किसनी के साथ खेलतेखेलते बड़ी होने लगी. किसनी से ज्यादा खूबसूरत और तेज दिमाग की. जहां किसनी को स्कूल जाना अखरता था, वहीं वह स्कूल में हर टीचर की प्यारी थी.

जब झींगुरी 10 साल की थी और 5वीं जमात में पढ़ रही थी, तभी खेलावन मौका पा कर शहर निकल लिया था...

शहर जा कर तो खेलावन की और मौज हो गई. गांव का पताठिकाना जैसे वह भूल ही गया. ठेकेदारी के साथसाथ खेलावन कमसिन मजदूरिनों को बातों ही बातों से पटा कर अपनी हवस पूरी करने में भी माहिर हो चला था. आजकल उस की नजर बिछिया पर थी.

सिर पर मौरंग ढोती 21 साल की बिछिया पर जब खेलावन की नजर पहली बार पड़ी थी, तो पहले उस ने पता लगाया कि आखिर यह कमसिन है कौन. फिर जब उसे पता लगा कि वह बिरजू की बहन है, जो बचपन में ही विधवा हो गई थी, तो उस ने बिरजू को बुला कर उस का गांवपता पूछा, फिर उस के फायदे की बात करता हुआ बोला, "कल से तुम गारा मशीन पर सीमेंटरोड़ी का मिक्सचर बनाने का काम संभालोगे. मैं तुम्हें मशीन चलाना और मिक्सचर बनाना सिखा दूंगा."

फिर उस ने बिछिया को भी मिक्सचर मशीन पर ही लगा दिया. दूसरे काम करते मजदूरमजदूरिनों के साथ बिछिया भी सिर पर रोड़ी और सीमेंट का भरा टोकरा बिरजू को ला कर पकड़ाती और फिर खाली टोकरी ले कर उसे फिर से भरने वापस चली जाती.

बिरजू कुछ ही दिनों में अच्छे ढंग से मशीन चलाना सीख गया. वह ठेकेदार खेलावन के गुण गाते नहीं थकता था.

एक दिन मछलीभात खाने के बहाने खेलावन बिरजू के घर पर पहुंच गया. बिछिया ने उसे उस दिन खाना क्या खिलाया कि उस का तो वहां रोज ही जाना होने लगा.

आखिर बिछिया उस के जाल में फंसने से कैसे बच पाती. उस बुझी राख की चिनगारी हवस की आग में कैसे भड़कने से बच सकती थी.

खेलावन का ज्यादातर समय बिरजू और बिछिया के साथ अच्छा बीत रहा था. उधर हाउसिंग प्रोजैक्ट का काम खत्म होने वाला था और बिछिया से खेलावन ऊब चुका था. इसीलिए उस ने बिरजू से कहा, "मैं अपने गांव जा रहा हूं. 15 दिन बाद लौट आऊंगा. तब तक तुम बिछिया का खयाल रखना... आते ही मैं उस से शादी कर लूंगा."

गांव का खयाल आते ही खेलावन को अपनी पहली पत्नी मानकी और दूसरी पत्नी जानकी के साथ किसनी और झींगुरी की याद अचानक सताने लगी थी. गांव जाने से पहले उस ने बाजार जा कर सब के लिए कुछ सामान खरीदा और रात वाली बस से चल कर अगले दिन अपने गांव पहुंच गया.

गांव में अपने ही हाथों से बनाए गए 2 कमरों और एक बाहरी बैठक व खुले से आंगन वाले उस घर के भीतर पहुंच कर उसे हैरानी तब हुई, जब उसे पता चला कि 5 साल पहले तक तपेदिक से ग्रस्त पहली पत्नी मानकी अभी तक जिंदा है और अब अच्छे से रहने लगी है, तो वह रात उस ने मानकी के साथ ही बिताने की सोच ली.

हालांकि शाम को घर पहुंचते ही जब उस ने झींगुरी को देखा तो देखता ही रह गया. इन 5 सालों में वह जवानी से भर जाएगी, यह तो उस ने सोचा ही नहीं था.

जानकी ने जब खेलावन की नजरों की तरफ देखा, तो उस ने झींगुरी से कहा, "अरे झींगुरी, अपने बापू के लिए चौके में जा कर कुछ मीठा और पीने का पानी ले कर आ..."

उस के सामने से हटते ही जानकी बोली, "तुम क्या समझे थे... वह 10 साल वाली बच्ची ही रहेगी. अरे, 10वीं जमात में दाखिला ले कर आगे की पढ़ाई कर रही है."

"और किसनी?"

"उस ने तो तुम्हारे जाने के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी थी और मेरे साथ मजदूरी पर जाने लगी थी."

"लेकिन वह है कहां... दिख क्यों नहीं रही?" खेलावन के इतना पूछते ही आसपास एकदम से सन्नाटा छा गया और मानकी अचानक रोने लगी.

उसे रोता देख कर खेलावन ने जानकी की तरफ देखते हुए पूछा, "अरे, इसे क्या हुआ? किसनी के बारे में पूछते ही यह रोने क्यों लगी?"

जानकी को भी तुरंत कुछ जवाब नहीं सूझा. वह कुछ बताती, तब तक मिठाई और पानी का भरा गिलास ला कर अपने पिता को देते हुए झींगुरी बोली, "वह जीवन मिस्त्री के साथ भाग गई. दोनों अम्मांओं ने उसे बहुत समझाया कि बापू आ जाएंगे, तो उन से कह कर हम तेरी शादी उसी से करवा देंगे जिसे तू चाहेगी, पर वह यही बोलती रही कि इस घर की चौखट पर कोई भी लड़के वाला बरात ले कर कभी नहीं आएगा.

"क्यों बापू... ? वह ऐसा क्यों सोचती थी... ? तुम यहां होते तो क्या उस की शादी धूमधाम से न करते. आखिर तुम हम सब को अकेले छोड़ कर शहर गए ही क्यों?"

खेलावन के चेहरे पर पलभर के लिए तनाव के भाव आए, फिर वह बड़बड़ाया, “चलो, जो हुआ अच्छा ही हुआ. भाग गई तो हम सब का बोझ ही तो हलका हुआ है.”

“बोझ... ? मैं कुछ समझी नहीं बापू... इस का मतलब तो यह हुआ कि दीदी अगर बोझ थीं तो मैं भी...” झींगुरी आगे कुछ कहती कि पास खड़ी जानकी ने उस का मुंह बंद कर दिया.

मीठा खा कर और पानी का गिलास खाली कर के खेलावन ने झींगुरी को तेजी से घूरा, फिर अपनी त्योरी पर बल डालता हुआ उठ खड़ा हुआ और मानकी के पास जा कर उसे समझाते हुए बोला, “अब इस रोनेधोने से कुछ न होगा. समझ लो, एक बड़ा काम अपनेआप हो गया और खर्चा भी बचा.”

उस ने एक बार फिर झींगुरी को घूरा, फिर जानकी के पास जा कर बोला, “मैं गांव घूम कर आता हूं. आ कर खाना खाऊंगा, तुम मानकी के कमरे में ही मेरा बिस्तर लगा देना. उसे तसल्ली की बहुत जरूरत है.”

यह कह कर खेलावन बाहर निकल गया. जानकी समझ गई कि हो न हो, वह देशी शराब के ठेके की तरफ ही गया होगा. उस का सोचना सच ही था. क्योंकि जब वह लौटा तो झूम रहा था. खाना खा कर मानकी को साथ लिए हुए वह उस के कमरे में जा कर लेट गया.

उस रात अपनी मां जानकी के पलंग पर ही उस की बगल में लेट कर झींगुरी ने सवाल पूछ डाला, “मां, जब बड़की अम्मां को पिताजी बाकायदा बाजेगाजे और बरात ले कर ब्याह लाए थे, तो तुम ने क्यों उन्हीं से शादी कर ली?”

“मैं तो अपनी बड़ी बहन मानकी की गंभीर बीमारी में उन की सेवा करने, कुछ दिनों के लिए यहां अपने जीजा के पास आई थी, लेकिन जीजा ने मुझे अपने प्रेमजाल में ऐसा फांसा कि...” कह कर जानकी भरे गले से बोली, “उस समय तू मेरे पेट में आ गई थी और मेरे पास 2 ही रास्ते थे कि तेरे साथ अपनी जीवनलीला खत्म कर लूं या अपनी बीमार बड़ी बहन की कसम पूरी करूं.”

“कसम... ? कैसी कसम मां... ?”

“उस समय तेरी बड़की मां बीमारी के चलते रातभर खांसती रहती थीं. तपेदिक की वजह से खून की उलटियां भी हो जाती थीं. बचने की कोई उम्मीद नहीं थी. किसनी तब 4 साल की थी.

“उस समय मुझे तेरी बड़की मां ने समझाया कि देख, अब तू वापस मायके जाएगी भी तो कौन सा मुंह ले कर? और जाएगी तो सोच कि मांबाप तो जीतेजी ही मर जाएंगे, फिर मैं भी अब ज्यादा दिन नहीं जिंदा रहने वाली. तू अब खेलावन की पत्नी बन कर ही यहां रह ले. किसनी की भी परवरिश हो जाएगी और तेरा बच्चा भी बच जाएगा.”

“इस का मतलब, मैं नाजायज हूं?”

“ऐसा मत बोल मेरी प्यारी बेटी. तू ही तो मेरे जीने की एक वजह है,” कह कर जानकी ने झींगुरी को कस कर अपनी छाती से चिपका लिया.

अपनी मां की छाती से लगी हुई झिंगुरी बोली, “लेकिन मां, एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि हम चारों को गांव में छोड़ कर पिताजी शहर क्यों चले गए? और गए तो इतने साल बाद क्यों लौटे? क्या उन्हें हमारी याद तक न आई होगी? किसनी दीदी के बारे में सुन कर भी वे ऐसे बोले जैसे उन का भाग जाना बहुत छोटी सी बात हो?”

“तू इतना ज्यादा मत सोच. अब तो तेरे बापू लौट आए हैं. अब तू सो जा.”

“सो तो जाऊंगी, पर मां, मैं बापू को परिवार की जिम्मेदारियों से मुंह छिपा कर शहर तब तक जाने नहीं दूंगी, जब तक वे मेरी पसंद के लड़के से शादी कर के मुझे विदा नहीं कर देंगे.

“अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो मैं भी उन के साथ इस बार शहर जा कर रहूंगी. भले ही मुझे भी वहां गारामिट्टी ढोना पड़े.”

“तो क्या तू ने गारामिट्टी ढोने के लिए पढ़ाई की है?”

“तुम ने भी तो हालात के आगे हार मान कर अपने शरीर को क्या इसलिए एक ऐसे इनसान को सौंप दिया था कि वह तुम्हें मजदूरन बना कर खुद शहर चला जाए?

“मां, किसनी के प्रति उन के बदलाव को देख कर आज मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है. तुम तो कहती थीं कि वह अपने परिवार की अच्छी परवरिश और बेटियों के सुखद भविष्य के लिए खूब सारे रुपए कमाने शहर गए हैं.”

“हां बेटी, कह कर तो यही गए थे.”

“लेकिन मां, अगर बापू ने रुपया कमाया होता, तो हम बहनों के लिए ढंग के कपड़े और तुम दोनों के लिए सोने के गहने ले कर आए होते. जैसे कपड़े वे शहर से ले कर आए हैं, वे तो यहां गांव में भी मिल जाते हैं.”

बड़ी देर तक झींगुरी जानकी से ऐसी ही बातें करती रही. उसे गुस्सा आ रहा था कि पता नहीं, क्यों बड़की अम्मां और मां उस के पिता को परमेश्वर का दर्जा देती हैं? क्या कोई बाप अपनी लड़की को ऐसी नजरों से घूरता है, जैसे उस का बापू घूर रहा था?

ऐसी नजरों से तो उसे गोपाल ने आज तक नहीं घूरा, जो उसे जीजान से प्यार करता है और हमेशा कहता है कि वह उस से शादी कर के अपनी दुलहन के रूप में विदा करा कर ले जाएगा.

ऐसी ही बहुत सी बातें सोचतेसोचते झींगुरी सो गई. जानकी की तो न जाने कब की आंख लग गई थी.

अगले दिन सवेरे खेलावन ने चायनाश्ता किया और फिर दोपहर का खाना खा कर गांव के अपने पुराने दोस्तों से मिलने चला गया.

झींगुरी सोचती ही रह गई कि अब वह अपने बापू से बहुत सारे सवाल पूछेगी. क्या किसनी के भाग जाने का उन्हें कोई मलाल नहीं है? क्या वे उसे ढूंढ़ने की भी कोशिश नहीं करेंगे...”

रात को जब खेलावन लौटा, तो नशे झूम रहा था. आते ही उस ने आंगन में पड़े तख्त पर बैठ कर जानकी को आवाज लगाई, “बहुत तेज भूख लगी है, खाना लगाओ.”

रात के 9 बज चुके थे. चूंकि सालों बाद खेलावन घर लौटा था, तो मानकी ने पूरीकचौरी के साथ खेलावन की पसंद की बहुत सी चीजें बना डाली थीं.

झींगुरी लगातार बड़की अम्मां के साथ रसोई में जुटी रही थी. वैसे भी किसनी के भाग जाने के बाद से वह ज्यादातर समय उन्हीं के साथ गुजारती.

आज सवेरे ही बड़की अम्मां ने झींगुरी को समझा दिया था कि कल रात को तेरा बापू थकाहारा शहर से लौटा था, तो मेरे कमरे में सो गया, इसलिए तुझे अपनी मां के पास सोना पड़ा, लेकिन आज वह तेरी मां के कमरे में समय बिताएगा, इसलिए तुम मेरे पास रहना. जानकी वाले कमरे में मत जाना.

झींगुरी ने मन ही मन कहा, ‘अरे बड़ी अम्मां, अब हम भी जवान हो गए हैं और खूब समझ रहे हैं कि कल बापू क्यों तुम्हारे कमरे में सोए और आज क्यों अम्मां के कमरे में सोएंगे.’

खाना खा कर एक मस्त डकार लेता हुआ खेलावन जा कर जानकी के कमरे में लेट गया. वह जातेजाते जानकी को हिदायत दे गया, “तू भी जल्दी से खाना खा कर कमरे में आजा.”

झींगुरी ने गौर किया कि उस की मां ने उस हिदायत को सुन कर ठीक से खाना भी नहीं खाया और उसे व बड़की मां को खाते हुए छोड़ कर जल्दी से हाथ धो कर खेलावन के पास चली गई.

झींगुरी मन मसोस कर रह गई.

उधर जानकी के साथ बिस्तरबाजी के बाद खेलावन बोला, “तुम्हारे साथ तो आज भी पहले जैसा मजा आया.”

जानकी ने पहले तो कोई जवाब नहीं दिया, पर बाद में वह बोली, “तुम तो हम सब को ऐसे छोड़ कर गए कि पिछले 5 सालों तक हमारा कोई हालचाल नहीं लिया?

“तुम्हारे जाने के बाद परिवार के भरणपोषण के लिए मजदूरी करतेकरते यह देखो मेरे उन नाजुक हाथों का क्या हाल हो गया, जिन्हें तुम शुरू में चूमते नहीं थकते थे.

“मेरे साथसाथ किसनी भी मजदूरी कर के कमाई करने लगी थी. उस ने अपनी सारी कमाई अपनी मां के इलाज में खर्च कर डाली.

“इधर दीदी तपेदिक रोग से ठीक हुईं, उधर एक रात जवान मिस्त्री जीवन किसनी को चुपचाप भगा कर ले गया. तब से झींगुरी बहुत बेचैन रहने लगी है.”

झींगुरी का नाम आते ही खेलावन ने पलंग के पीछे की दीवार पर अपनी पीठ टिकाते हुए कहा, “जानकी, अपनी झींगुरी को सवेरे तो मैं देखता ही रह गया था. बिलकुल तुम्हारी ही तरह सुंदर चेहरा और शरीर की उठान...”

“लेकिन, तुम उस समय झींगुरी को इतने गुस्से से क्यों घूर रहे थे... सच बताओ कि किसनी के भाग जाने की सुन कर तुम्हें बुरा नहीं लगा.”

“इस में बुरा लगने वाली क्या बात है. हम उस के लिए लड़का ढूंढ़ते, उस ने खुद अपना जीवनसाथी ढूंढ़ लिया.”

“लेकिन उस की शादी हम विधिविधान से करते तो शायद इस घर पर मेरे चलते लगा एक पुराना कलंक

मिट जाता," कह कर जानकी उस समय में चली गई, जब वह गांव में सौत के नाम से जानी जाने लगी थी.

कुछ देर बाद अपनेआप को सामान्य करते हुए जानकी खेलावन से बोली, "किसनी तो भाग गई, लेकिन उस समय हमें लोगों के कितने ताने सुनने पड़े और हम पर क्या गुजरी, यह तुम नहीं समझ पाओगे," इतना सुन कर खेलावन ने उसे समझाते हुए कहा, "तू इन गांव वालों की बातों को दिल पर न ले. अरे, ये तो ऐसे ही बकते रहते हैं. इन्होंने कभी शहर देखा हो तो समझ में आए कि वहां कौन क्या कर रहा है, कहां जा रहा है, किस से मिल रहा है. इन सब बातों पर कोई ध्यान ही नहीं देता."

इतना कह कर खेलावन चुप हो कर जानकी को गौर से देखने लगा. एक बार उस के मन में फिर हवस का ज्वार उठा और वह जानकी से फिर लिपट गया...

कुछ देर बाद खेलावन के खर्राटे कमरे में गूंजने लगे, लेकिन जानकी को नींद नहीं आई. वह खेलावन के पास से हट कर नीचे बिछी दरी पर लेट गई.

कल रात झींगुरी की कही बातें उस के दिमाग में गूंजने लगीं कि वह जब तक उस के पिता उस की पसंद के लड़के से विधिवत शादी कर के विदा नहीं कर देते, तब तक वह उन्हें शहर नहीं जाने देगी.

तो क्या झींगुरी भी किसी लड़के के चक्कर में फंसी हुई है? कहीं वह भी किसी के साथ भाग गई तो क्या होगा? ये विचार आते ही जानकी उठ कर पास वाले कमरे में चली गई.

झींगुरी की भी आंखों में नींद नहीं थी. बड़की अम्मां अपनी खाट पर गहरी नींद में सो रही थीं.

मां को अपनी खाट के पास देख कर झींगुरी उठ कर बैठ गई और बोली, "मां, तू अब तक सोई नहीं?"

"हां, तेरे बापू के सो जाने के बाद जाने क्यों तेरी बातें मेरे कानों में गूंजने लगीं. सचसच बता, क्या तू भी किसी लड़के के प्यार में फंस..."

छम्मक-छल्लो
Rajesh na
किसी दोस्त की हवेली पर...
मनोज डार्लिंग, मैं बहुत बोर हो रही हूं. चलो, हम छुपाछुपी खेलते हैं. तुम मुझे ढूंढ़ो.
ढूंढ़ने पर क्या इनाम मिलेगा?
अगर तुम ने मुझे ढूंढ़ लिया, तो हम बैडरूम में मस्ती करेंगे.
पर तुम्हारे दोस्त की यह हवेली तो बहुत बड़ी है. मैं नहीं ढूंढ़ पाया तो...?
अरे, ऐसा मत कहो यार. मैं जहां भी छिपूंगी, रास्ते में अपने कपड़े उतारती जाऊंगी, फिर तो ढूंढ़ने में दिक्कत नहीं होगी. मेरी पैंटी पहचानते हो न?
वाह बेबी...

झींगुरी ने अचानक मां के होंठों पर हाथ रखते हुए कहा, "यहां नहीं, चलो बाहर बरामदे में पड़े तख्त पर लेट कर बातें करते हैं. यहां बातें करेंगे तो बड़की अम्मां की नींद खुल सकती है."

वे दोनों वहां से हट कर तख्त पर आ कर लेट गईं. झींगुरी ने बताया, "मां, मैं भी अब 16 साल की होने जा रही हूं. आप तो इस उम्र से गुजर चुकी हो. सच तो यह है कि मेरे चाहने वाले इस गांव में बहुत से लड़के हैं. पर ज्यादातर मेरे शरीर से खेलना चाहते हैं.

"एक गोपाल है, जो मुझे दिल से चाहता है. सुनार काका का एकलौता लड़का है. उस का यही कहना है कि मैं तुम्हीं से शादी करूंगा. मातापिता को भी मना लूंगा, पर भाग कर शादी नहीं करूंगा. वह मुझे अपनी मां से भी मिलवा चुका है.

"सच तो यह है मां कि मैं भी चाहती हूं कि मेरी भी बरात आए. मैं दुलहन का लाल जोड़ा पहन कर आप सब से विदा लूं. आप के ऊपर लगे कलंक को मिटा दूं, पर बापू..."

"क्या यही उन का चरित्र है? हम सब को छोड़ कर शहर भाग जाना? अपनी लड़की के भाग जाने पर यह कहना कि वह भाग गई तो अच्छा ही हुआ. हमारा बोझ ही तो कम किया उस ने? रोज शराब पीना?

"मां, मुझे कल रोकना नहीं. कल मेरी अपने बापू से लड़ाई हो कर रहेगी. ज्यादा से ज्यादा वे मुझे मारेंगेपीटेंगे, पर मेरे सवालों के जवाब उन्हें देने ही होंगे. यह भी बताना होगा कि शहर जा कर कितना कमाया? कमाया भी या..."

इस बार जानकी ने झींगुरी के मुंह पर हाथ रख कर उसे चुप करा दिया.

रात बहुत हो चली थी. थोड़ी देर में ही उन दोनों को नींद ने अपने आगोश में ले लिया.

सवेरे चौके की खटरपटर से उन दोनों की आंखें खुलीं. मानकी खेलावन के लिए चाय बना रही थी. खेलावन आंगन में नल के पास खड़ा मंजन कर रहा था.

जानकी उठ कर शौचालय में घुस गई और झींगुरी बड़ी मां के पास चौके में पहुंच कर बोली, "अम्मां, हम भी उठ गए हैं और हम भी बापू के साथ बैठ कर चाय लेंगे, जब तक मां बाहर निकलती हैं, मैं भी ब्रश कर लेती हूं."

खेलावन हाथमुंह धो कर बरामदे में पड़े उसी तख्त पर बैठ गया और सामने आंगन में गेंदे और गुलाब के खिले फूलों के पौधों को देख कर खुश होता हुआ ब्रश करती हुई झींगुरी से पूछ बैठा, "ये क्यारियों में इतने सुंदर

फूलों के पौधे किस ने लगाए?”

“किसनी दीदी ने. कितना शौक था उन्हें पेड़पौधे लगाने का. आज वे होतीं तो यह बगीचा और भी अच्छा दिखता,” कहते हुए झींगुरी खेलावन के पास आ कर बैठ गई.

जानकी भी फ्रैश हो कर मंजन करने के बाद वहीं आ गई, तभी मानकी एक हाथ में चाय वाले 4 कप पकड़े और दूसरे हाथ में चाय भरी गरम केतली लिए बाहर आने लगी, तो झींगुरी ने लपक कर उन के हाथ से गरम केतली ले ली और बोली, “अम्मां, तुम भी न, मानती नहीं हो. अरे, मैं तो तुम्हारी आवाज का इंतजार कर रही थी.”

जानकी चाय के साथ खाने के लिए अपने हाथ से बनाई मठरियां ले कर आ गई. चारों चाय पीने लगे. तभी झींगुरी बोली, “अब तो तुम हम सब को छोड़ कर शहर नहीं जाओगे न बापू?”

“अभी इतनी जल्दी तो नहीं जाएंगे.”

“मतलब, अभी न सही, लेकिन छोड़ कर जाओगे जरूर.”

“हां, पैसा कमाने के लिए जाना तो पड़ेगा ही. यहां गांव में क्या रखा है.”

“और लौटोगे तब, जब मैं भी किसी के साथ भाग जाऊंगी.”

“अरे, यह क्या बकवास कर रही है तू. जानकी, इसे समझाओ वरना मेरा हाथ उठ जाएगा,” खेलावन चिल्लाया.

“मैं इसे समझाने वाली कौन होती हूं? झींगुरी अब बड़ी हो गई है, समझदार भी है. 2 साल बाद यह शादी की उम्र में पहुंच जाएगी. लड़का तो इस ने भी पसंद कर रखा है. लेकिन इस की एक ही इच्छा है कि वे भाग कर शादी नहीं करेगी. बाकायदा इस घर से विदा हो कर जाएगी. अभी तो इसे अपनी पढ़ाई पूरी करनी है,” जानकी बोली.

मानकी, जो अब तक चुप थी, एकदम से बोल पड़ी, “झींगुरी ने सही तो कहा. तुम गांव तभी तो आए हो, जब किसनी भाग गई और जिस का तुम ने अफसोस तक नहीं जताया. फिर जब तुम शहर पैसा कमाने के इरादे से गए थे, तो इन 5 सालों में बहुत कमा लिया होगा.

“आखिर वह कमाया हुआ पैसा कहां गया? फिर तुम जवान लड़की पर हाथ कैसे उठा सकते हो? हम दोनों के साथ तुम ने बहुत मनमानी कर ली. किसनी भी जाने किस बात से डरती रही, जबकि वह कहती रहती थी कि मेरा बापू अपने कर्मों के चलते गांव छोड़ कर भागा है, इसलिए मुझ से शादी करने को कोई तैयार नहीं है.”

“मेरे कानों में आज भी किसनी के शब्द गूंजते रहते हैं. जब उस ने कहा था कि मां, अब तू बिलकुल ठीक हो गई है. तेरा खयाल रखने के लिए छोटी मां और झींगुरी हैं, इसलिए मैं किसी सवेरे तुझे घर में न दिखूं तो समझ लेना कि जीवन के साथ भाग कर मैं ने शादी रचा ली है.”

बारीबारी से सब के मुंह से सचाई सुन कर खेलावन हैरान रह गया. सोचने लगा कि हकीकत में उस ने अब तक कमाया ही क्या है? रुपयापैसा जो उस ने कमाया, वह सब ऐयाशी में ही खर्च कर डाला. रही इज्जत तो वह भी कहां कमा पाया.

झींगुरी सच ही तो कह रही थी कि शायद जब मैं लौटता, तब तक वह भी किसी के साथ भाग चुकी होती. लेकिन वह यह भी तो कह रही है कि उस का चाहने वाला तो है, पर भागेगी नहीं. तब तक इंतजार करेगी, जब तक उस को दुलहन के रूप में कोई विदा करा कर नहीं ले जाएगा.

एक विचार अचानक खेलावन के मन में कौंधा और उस ने पूछा, “तेरी मां अभी कह रही थी कि तू ने किसी लड़के को पसंद कर रखा है, कौन है वह?”

“सुनार काका का एकलौता लड़का गोपाल.”

“अरे, कहां वह सुनार परिवार और कहां मैं एक मामूली मिस्त्री.”

“बस, यही कमी है बापू तुम में कि अपने को कम आंकना. तुम्हें पता नहीं है कि गोपाल की मां तुम्हारा कितना गुणगान करती हैं?”

“वह क्यों... ?”

“क्योंकि बहुत पहले तुम ने उन के गोपाल को डकैतों के चंगुल से बचाया था. वे तो फिरौती के चक्कर में उसे बचपन में उठा कर ले जाने वाले थे. गोपाल की मां तो अकसर कहती हैं कि जब भी तेरा बापू शहर से वापस आए, तो उसे मुझ से मिलाने के लिए ले आना.”

“ओह...” कहते हुए खेलावन ने झींगुरी को अपने करीब बुलाया और उस को सीने से लगाता हुआ बोला, “मेरी बच्ची, मैं तुझ से वादा करता हूं कि अब मैं शहर नहीं जाऊंगा. यहीं गांव में तुम सब के साथ रह कर काम करूंगा और 2 साल बाद तेरी शादी धूमधाम से करूंगा.”

“और किसनी दीदी?”

“उसे भी मैं ढूंढ़ निकालूंगा और फिर तेरे मंडप में ही इज्जत के साथ उस की भी शादी गोपाल से करा कर विदा करूंगा.”

जानकी और मानकी की नजरें आपस में टकराईं, फिर अचानक दोनों एकदूसरे के गले से लिपट गईं. ●

क्या शराब ? लीवर खराब

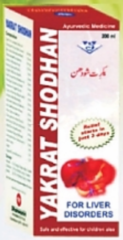

वैद्य सत्य नारायण धौली प्याऊ मथुरा ने एक साक्षात्कार में बताया कि लिवर (यकृत) शरीर का बहुत प्रमुख अंग है। भोजन को पचाना तथा शुद्ध रक्त का निर्माण करना यकृत (लिवर) का मुख्य कार्य है।जो लोग शराब पीते हैं उनके यकृत प्लीहा में प्रायः शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण पेट में दर्द की शिकायत शुरू हो जाती है। खाना हजम नहीं होता, कभी दस्त तो कभी कब्ज होने लगता है। बहुत ज्यादा समय होने पर पीलिया जैसी जानलेवा तथा कमजोरी देने वाली बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं। हमारा कथन है कि लोग शराब पीना छोड़ दें, यदि नहीं तो कम से कम अपने लिवर (यकृत) का विशेष ध्यान रखें। ''यकृत शोधन'' भाप से बनी वो औषधि हे जो खाना खाने के बाद सुबह–शाम 4–4 चम्मच आधा गिलास पानी में पी जाती है। जिसका असर 12 घंटे में शुरू हो जाता है, सुबह को काला–काला मल निकलना शुरू हो जाता है और यकृत की शुद्धि प्रारम्भ हो जाती है। **''यकृत शोधन''** यकृत–प्लीहा के शोथ (एन्लार्जमेन्ट) में बहुत लाभकारी है। **''पाचन अमृत सुधा''** 8 चम्मच में 3 से 5 ' **'यकृत शोधन''** मिलाकर खाना खाने के तुरन्त बाद पीने से दो गुना लाभ होता है।

नोट : बच्चों को भी '' यकृत शोधन'' लिवर (यकृत) रोगों में दिया जा सकता है।

उपलब्ध न होने पर 9258040152 पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक आर्डर बुक करायें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के कुछ विक्रेताओं के नम्बर

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

वापसी

निधि अमित पांडे

आंगन में तुलसी के चबूतरे पर लगी अगरबत्ती की खुशबू ने पूरे घर को महका दिया था. पूनम अभीअभी पूजा कर के रसोईघर में गई ही थी कि दादी मां ने रोज की तरह चिल्लाना शुरू कर दिया था, "अरी ओ पूनम, पूजापाठ का ढकोसला खत्म हो गया हो, तो चायवाय मिलेगी कि नहीं.

"ऐसे भी कौन सा सुख दिया है ऊपर वाले ने... मेरे हंसतेखेलते परिवार की सारी खुशियां छीन लीं," बोलते हुए दादी मां ने गुस्से से अपनी भंवें सिकोड़ ली थीं.

पूनम ने रसोईघर में से झांकते हुए कहा, "चाय बन गई है दादी मां, अभी लाती हूं."

दादी मां को चाय दे कर पूनम मुड़ी ही थी कि उन्होंने फुसफुसाना शुरू कर दिया, "आदमी का तो कुछ अतापता नहीं है... जिंदा है भी कि नहीं, फिर भी न जाने क्यों इतना बनसंवर कर रहती है..."

पूनम ने सबकुछ सुन कर भी अनसुना कर दिया था. और करती भी क्या, उस के दिन की शुरुआत रोज ऐसे ही दादी मां के तीखे शब्दों से होती थी.

दादी मां को चाय देने के बाद पूनम अपने ससुर को चाय देने के लिए उन के कमरे में जाने लगी, तो उन्होंने उसे आवाज दे कर कहा, "पूनम बेटा, मेरी चाय बाहर ही रख दे, मैं उधर ही आ कर पी लूंगा."

"जी पापा," बोल कर पूनम वापस चली आई थी.

पूनम के ससुर शशिकांतजी रिटायर्ड आर्मी अफसर थे. उन का बेटा मोहित भी सेना में जवान था. पूनम मोहित की पत्नी थी.

3 साल पहले ही मोहित और पूनम का ब्याह हुआ था और ब्याह के 2-4 दिन बाद ही मोहित को किसी खुफिया मिशन पर जाने के लिए सेना में वापस बुला लिया गया था.

इस बात को 3 साल बीत चुके थे, पर अब तक मोहित वापस नहीं लौटा था और न ही उस की कोई खबर आई थी, इसलिए फौज की तरफ से उसे गुमशुदा करार दिया गया था.

मोहित के लापता होने की खबर से शशिकांतजी की पत्नी को गहरा सदमा लगा था, जिस के चलते वे कोमा में चली गई थीं. डाक्टर का कहना था कि मोहित की वापसी ही उन के लिए दवा का काम कर सकती है.

पूनम को यकीन था कि मोहित जिंदा है और एक दिन जरूर वापस आएगा. उस के इस यकीन को कायम रखने के लिए शशिकांतजी पूरा साथ देते थे. उन्हें पूनम का पहनओढ़ कर रहना पसंद था. मोहित के हिस्से का लाड़प्यार भी वे पूनम पर ही लुटाते थे.

पूनम ने फैशन डिजाइनिंग का कोर्स किया हुआ था. उस की शादी के कुछ समय बाद ही उस के ससुर ने एक बुटीक खुलवा दिया था.

तब दादी मां ने इस बात का भरपूर विरोध करते हुए कहा था कि समय काटने के लिए घर के काम कम होते हैं क्या, पर शशिकांतजी ने उन की एक न सुनी थी.

सास की बीमारी के बाद घर के कामकाज की पूरी जिम्मेदारी पूनम के कंधों पर आ गई थी. बुटीक के साथ वह घर भी बखूबी संभाल रही थी. पर दादी मां हमेशा उस से नाराज ही रहती थीं. उन्हें पूनम का साजसिंगार करना, गाड़ी चलाना, बुटीक जाना बिलकुल नहीं सुहाता था. वे पूनम को ताने मारने का एक भी मौका अपने हाथों से जाने नहीं देती थीं.

समय बीतता जा रहा था. मोहित की मां की तबीयत में कोई सुधार नहीं था. इस बीच पूनम के मातापिता कई बार उसे अपने साथ घर ले जाने के लिए आए, पर हर बार उन्हें खाली हाथ ही लौटना पड़ा.

पूनम का कहना था कि मोहित वापस आएगा तो उसे यहां न पा कर परेशान होगा और उस के परिवार की जिम्मेदारी भी अब मेरी है. अब ससुराल ही मेरा मायका है.

शशिकांतजी को पूनम की ऐसी सोच और समझदारी पर बहुत गर्व होता था.

एक दिन शशिकांतजी के करीबी दोस्त कर्नल मोहन घर आए और बोले, "शशि, मैं एक प्रस्ताव ले कर तेरे पास आया हूं."

"कैसा प्रस्ताव?" शशिकांतजी ने पूछा.

इस के बाद उन दोनों दोस्तों ने बहुत देर तक साथ में समय बिताया और बातें कीं, फिर कर्नल मोहन जातेजाते बोले, "मुझे तेरे जवाब का इंतजार रहेगा."

कर्नल मोहन के जाने के बाद शशिकांतजी काफी दिन तक किसी गहरी सोच में डूबे रहे.

पूनम ने कई बार पूछने की कोशिश की, पर उन्होंने 'चिंता की कोई बात नहीं' बोल कर उसे टाल दिया. पर मन ही मन वे पूनम के लिए एक बड़ा फैसला ले चुके थे, जिस की चर्चा पूनम के मातापिता से करने के लिए आज वे उस के मायके जा रहे थे. पूनम इस बात से पूरी तरह बेखबर थी.

पूनम के बुटीक जाते ही शशिकांतजी घर से निकल गए थे. उन्हें अचानक यों देख कर पूनम के मातापिता थोड़े चिंतित हो उठे थे.

पूनम के पिताजी ने हाथ जोड़ कर शशिकांतजी से पूछा, "आप अचानक यहां? सब ठीक तो है न?"

"हांहां, सब ठीक है. चिंता की कोई बात नहीं..." शशिकांतजी बोले, "मैं ने पूनम के लिए एक फैसला लिया है, जिस में आप दोनों की राय लेना जरूरी था."

यह सुन कर पूनम के मातापिता एकदूसरे की तरफ हैरानी से देखने लगे.

पूनम की मां ने बड़े ही उतावलेपन से पूछा, "कैसा फैसला भाई साहब?"

शशिकांतजी ने कहा, "पूनम के दूसरे ब्याह का फैसला."

"यह आप क्या कह रहे हैं... यह कैसे मुमकिन है..." पूनम के पिता ने हैरानी से कहा.

शशिकांतजी बोले, "क्यों मुमकिन नहीं है? मोहित की वापसी अब एक सपने जैसी है. चार दिन की शादी को निभाने के लिए पूनम अपनी पूरी जिंदगी अकेलेपन के हवाले कर दे, ऐसा मैं नहीं होने दे सकता. उस बच्ची के विश्वास पर अपने यकीन की मोहर अब और नहीं लगा सकता. बिना किसी कुसूर के वह एक अधूरेपन की सजा क्यों काटेगी..."

"पर भाई साहब..." पूनम की मां ने बीच में बोलना चाहा, तो शशिकांतजी ने उन्हें रोकते हुए कहा, "माफ कीजिएगा, पर मेरी बात अभी पूरी नहीं हुई है."

इतना कह कर वे आगे बोले, "मैं अपने बेटे के मोह में पूनम के भविष्य की बलि नहीं चढ़ने दूंगा. आज मेरी जगह मोहित भी होता तो पूनम के लिए इस तरह की अधूरी जिंदगी उसे कभी स्वीकार नहीं होती.

"आप दोनों ने उसे जन्म दिया है. उस की जिंदगी का इतना बड़ा फैसला लेने के पहले आप को इस की सूचना देना मेरा फर्ज था, इसलिए चला आया वरना पूनम का कन्यादान करने का फैसला मैं ले चुका हूं. अब इजाजत चाहता हूं."

शशिकांतजी के जाने के बाद पूनम के मातापिता बहुत देर तक सोचते रहे कि वे अपनी बेटी के भविष्य के बारे में इतनी गहराई से नहीं सोच पाए, पर शशिकांतजी जैसे लोग बहू को बेटी की जगह रख कर अपनी सोच का लैवल कितना ऊपर उठाए हुए हैं. पूनम के दूसरे ब्याह के बारे में सोचते समय मोहित का चेहरा न जाने कितनी बार उन की आंखों के सामने घूमा होगा.

पूनम के मायके से लौटने के बाद शशिकांतजी अपने

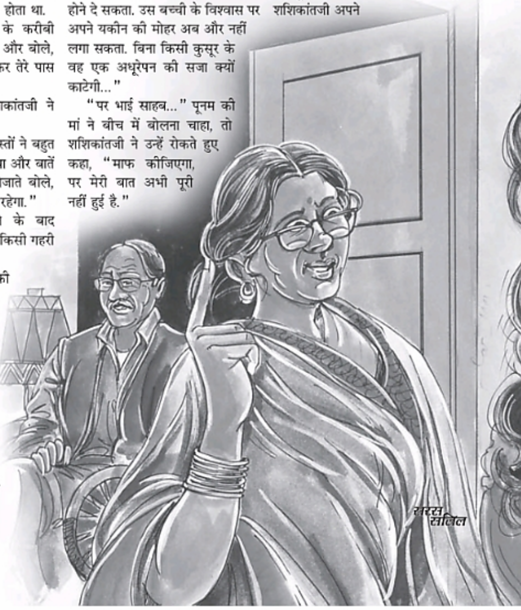

कमरे से बाहर नहीं आए थे. पूनम शाम की चाय ले कर उन के कमरे में ही चली गई थी.

चाय का कप टेबल पर रखते हुए उस ने पूछा, "क्या हुआ पापा? तबीयत ठीक नहीं है क्या?"

"सब ठीक है बेटा," उन्होंने जवाब दिया और कहा, "आ, थोड़ी देर मेरे पास बैठ. तुझ से कुछ बात करनी है."

"जी पापा," बोल कर पूनम उन के पास बैठ गई.

शशिकांतजी ने एक गहरी सांस ली और बोलना शुरू किया, "मोहित की गैरमौजूदगी में तू ने इस घर की जिम्मेदारियों के साथसाथ हम सब को भी बहुत अच्छे से संभाला है. अपने छोटेबड़े हर फर्ज को तू ने प्यार और अपनेपन से निभाया है.

"इतना ही नहीं, अपनी दादी मां के रूखे बरताव के बाद भी तू कभी उन की सेवा करने से पीछे नहीं हटी. अगर मैं यह कहूं कि मोहित की कमी तू ने कभी महसूस ही नहीं होने दी, तो यह गलत नहीं होगा.

"पर अब नहीं बेटा. मैं चाहता हूं कि मोहित की चंद यादों का जो दायरा तू ने अपने आसपास बना रखा है, उसे तोड़ कर तू बाहर निकले और जिंदगी में आगे बढ़े..."

पूनम ने कहा, "आज अचानक ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं आप? कुछ हुआ है क्या? मोहित की कोई खबर आई क्या? बोलिए न पापा, क्या हुआ है?" पूनम बेचैन हो उठी थी.

शशिकांतजी ने भरे हुए गले से कहा, "कोई खबर नहीं आई मोहित की और न ही आएगी. उस की वापसी की उम्मीद अब छोड़नी होगी हमें."

पूनम जोर से चिल्लाते हुए बोली, "नहीं पापा, ऐसा मत कहिए..."

इतने सालों से पति के बिछड़ने का दर्द जो उस ने अपने अंदर दबा कर रखा था, वह आज आंसुओं की धार के साथ बहता जा रहा था.

शशिकांतजी ने पूनम के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "आज यह लाचार और बेबस पिता तुझ से कुछ मांगना चाहता है बेटा, मना मत करना. बहुत सोचसमझ कर मैं ने तेरा कन्यादान करने का फैसला लिया है."

पूनम ने चौंकते हुए कहा, "पापा, आप भी..." कमरे से बाहर जातेजाते वह रुकी और बोली, "आप गलत कह रहे हैं पापा, अगर मोहित की कमी मैं पूरी कर पाती तो मम्मी आज अस्पताल में कोमा में न होतीं, दादी मां को मुझ से इतनी नफरत न होती और आज आप मुझे इस घर से विदा करने की बात नहीं करते," ऐसा बोल कर वह तेजी से कमरे से बाहर निकल गई.

पूनम के जाने के बाद शशिकांतजी सोच में पड़ गए थे कि 'आप भी' से पूनम का क्या मतलब था?

इस बात को 8 दिन बीत चुके थे. शशिकांतजी अपने फैसले पर अटल थे. उन के इस फैसले से दादी मां बहुत नाराज थीं और दादी मां ने उन से बात करना बंद कर दिया था, पर उन्होंने हार नहीं मानी थी.

शशिकांतजी एक बार फिर पूनम को समझाने की उम्मीद से उस के बुटीक पहुंच गए थे.

उन्हें देखते ही पूनम ने कहा, "अरे पापा, आप यहां कैसे?"

"कुछ नहीं बेटा, शाम की सैर के लिए निकला था..." शशिकांतजी बोले, "सोचा कि तुझे देख लेता हूं... तेरा काम खत्म हो गया होगा, तो साथ में घर चलेंगे."

पूनम ने कहा, "पापा, मुझे थोड़ा समय और लगेगा."

"ठीक है..." शशिकांतजी बोले, "मैं बाहर तेरा इंतजार करता हूं, आ जाना."

थोड़ी देर बाद बुटीक बंद कर के पूनम अपनी कार ले कर बाहर आ गई. शशिकांतजी ने उस से कहा, "आज मैं गाड़ी चलाता हूं."

कार चलाते हुए शशिकांतजी ने फिर अपनी बात शुरू की और पूनम से कहा, "तू ने मेरी बात का कोई जवाब नहीं दिया बेटा... और उस दिन तू ने 'आप भी' ऐसा क्यों कहा था?"

पूनम ने कहा, "मोहित ने मिशन पर जाने से पहले मुझे कसम दी थी कि अगर वह वापस नहीं लौटा तो मैं उस के इंतजार में अपनी पूरी जिंदगी नहीं निकालूंगी और एक नई शुरुआत करूंगी. उस दिन आप ने भी वही बात कह दी. आप ही की तरह शायद वह भी मुझे अपने से दूर करना चाहता था."

शशिकांतजी को इस बात की बहुत खुशी हो रही थी कि मोहित के बारे में उन की सोच गलत नहीं थी. वह भी पूनम के लिए इस तरह की अधूरी जिंदगी नहीं चाहता था.

शशिकांतजी अपने फैसले पर अब और ज्यादा मजबूत हो गए थे. उन्होंने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "तुझे याद है, कुछ दिन पहले कर्नल मोहन अपने घर आए थे. वे अपने बेटे गौरव के लिए तेरा हाथ मांगने आए थे.

"गौरव की पहली पत्नी की शादी के 4 महीने बाद ही मौत हो गई थी. वह अमेरिका में बहुत बड़ी कंपनी में काम करता है. वह अभी यहीं है और कुछ दिन बाद वापस जाने वाला है, इसलिए उन्हें शादी की जल्दी है.

"कर्नल मोहन को मैं बहुत सालों से जानता हूं. वे बेहद सुलझे और समझदार लोग हैं. तू बहुत खुश रहेगी... और तुझे तो गौरव के साथ अमेरिका में ही रहना होगा. इस रिश्ते के लिए हां कह दे बेटा," शशिकांतजी ने जोर देते हुए पूनम से कहा.

पूनम ने जवाब दिया, "मुझे नहीं पता था पापा कि आप के लाड़प्यार का कर्ज मुझे एक दिन आप से दूर जा कर चुकाना पड़ेगा."

शशिकांतजी ने पूनम और गौरव का रिश्ता तय कर दिया. पूनम के मातापिता को भी खबर कर दी गई.

शादी का दिन आ चुका था. बंगले की सजावट शशिकांतजी ने पूनम की पसंद के लाल गुलाब के फूलों से कराई थी.

बरात जैसे ही बंगले के सामने पहुंची, तो शशिकांतजी ने सभी का स्वागत किया. थोड़ी देर बाद पूनम की मां उसे मंडप में ले जाने के लिए आईं, तो पूनम ने कस कर अपनी मां के हाथों को पकड़ा और कहा, "मुझ से यह नहीं होगा मां. मेरा मन बहुत घबरा रहा है. पता नहीं, क्यों बारबार ऐसा लग रहा है कि मोहित यहींकहीं आसपास है.

"मैं किसी और से शादी नहीं कर सकती. यह सब होने से रोक दो मां," पूनम अपनी मां के सामने हाथ जोड़ कर रोते हुए बोली और बेसुध हो कर जमीन पर गिर पड़ी.

पूनम की मां उस के बेसुध होने की सूचना देने बाहर आईं, तो उन्होंने देखा कि फौज की एक गाड़ी बंगले के बाहर आ कर रुकी है. उस गाड़ी में से सेना के 2 जवान उतरे, फिर उन्होंने हाथ पकड़ कर काला चश्मा पहने एक शख्स को गाड़ी से नीचे उतारा.

विवाह समारोह में आए सभी लोगों की नजरें बड़ी हैरानी से उस शख्स को देख रही थीं. उसे देखते ही शशिकांतजी की आंखों से आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा.

"मोहित... मेरे बेटे, तू ने बहुत इंतजार कराया," बोलते हुए शशिकांतजी ने उसे अपने सीने से लगा कर बेटे की वापसी की तड़प को शांत कर दिया.

पूनम की मां खुशी से भागते हुए अंदर गईं और उन्होंने पूनम के ऊपर पानी के छींटे मारे, फिर जोर से उसे झकझोर कर बोलीं, "उठ बेटा, बाहर जा कर देख... तेरे विश्वास ने आज तेरे सुहाग की वापसी कर ही दी."

पूनम सभी मर्यादाओं को लांघ कर गिरतीपड़ती भागते हुए बाहर गई और मोहित से जा लिपटी. वह फूटफूट कर रोते हुए बोली, "आखिर आप ने मेरे यकीन की इज्जत रख ही ली मोहित."

शोरगुल की आवाज से दादी मां भी बाहर आ गई थीं और मोहित को देख कर अपने आंसुओं के बहाव को रोक नहीं पाई थीं.

मोहित ने पूनम से कहा, "मेरी वापसी एक अधूरेपन के साथ हुई है पूनम. लड़ाई में मैं अपनी दोनों आंखें गंवा चुका हूं. जिसे अब खुद हर समय सहारे की जरूरत पड़ेगी वह तुम्हारा सहारा क्या बनेगा."

पूनम ने चिल्लाते हुए कहा, "यह कैसी बात कर रहे हैं आप. हम पूरी जिंदगी के साथी हैं. हमें एकदूसरे के सहारे और हमदर्दी की नहीं, बल्कि साथ की जरूरत है..." इतना कह कर पूनम ने अपना हाथ मोहित के आगे बढ़ाया और कहा, "आप देंगे न मेरा साथ?"

गौरव इतनी देर से दूर खड़ा हो कर सब देख रहा था. उस ने मोहित का हाथ पकड़ कर अपने हाथों से पूनम के हाथ में दे दिया.

पूनम कर्नल मोहन के पास गई और हाथ जोड़ कर बोली, "मुझे माफ कर दीजिए अंकल. इस घर और मोहित को छोड़ कर मैं कहीं नहीं जा सकती."

कर्नल मोहन ने पूनम के सिर पर अपना हाथ रख दिया. ●

दुलहन प्यार करने वाले की

अलखदेव प्रसाद 'अचल'

ममता जब से कालेज में पढ़ने गई थी, उसी समय विनय से आंखें चार हो गई थीं. दोनों के बीच प्यार इतना गहराता जा रहा था कि वे रोजाना छुट्टी के पहले या छुट्टी के बाद मिल ही लिया करते थे. वे क्लास में भी बैठते थे, तो एकदूसरे का ध्यान रखते थे. उन दोनों के हावभाव देख कर कालेज के दूसरे छात्रछात्राएं भी इस प्यार के बारे में जान चुके थे.

विनय और ममता ने एकदूसरे के साथ जीनेमरने की कसमें भी खा ली थीं, पर लोकलाज के डर से वे दोनों अपने मातापिता को इस प्यार के बारे में नहीं बता पाते थे.

यही सिलसिला चल रहा था कि ममता के पिता ने उस की शादी देवेंद्र नाम के लड़के से तय कर दी.

ममता ने यह बात विनय को बता दी. साथ ही, उस ने यह भी कह दिया, "मैं वहां शादी नहीं करना चाहती हूं. मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं जी सकूंगी. पर, मातापिता के सामने मेरा मुंह खुल नहीं पाता है.

"ऐसा लगता है कि वे क्या सोचेंगे? गांवघर के लोग क्या कहेंगे? पर इतना तय है कि शादी के बाद भी मैं देवेंद्र को अपना प्यार नहीं दे सकूंगी. मैं ससुराल में नहीं रह पाऊंगी."

विनय इस खबर को सुन कर काफी तिलमिला गया. उसे लग रहा था कि अगर ममता विरोध नहीं करेगी, तो शादी के बाद ससुराल चली जाएगी. हो सकता है कि धीरेधीरे उस का मन भी बदल जाए. आखिर वह अपने घर में क्यों नहीं कहती है, 'मैं विनय से प्यार करती हूं. मैं जब भी शादी करूंगी, तो उसी से करूंगी.'

इसी बीच ममता की शादी का दिन भी तय हो गया. यह जान कर विनय ने साफसाफ कह दिया, "ममता, मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकूंगा. तुम्हारे घर बरात जरूर आएगी, पर तुझे दुलहन बना कर तो मैं ही लाऊंगा."

विनय जो कह रहा था, वह शायद ममता को भी अच्छी तरह समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह सब होगा कैसे?

ममता के घर बरात भी आ गई थी. बरातियों के आने पर जोजो होता है, वह सब हो गया था. फेरों के लिए दूल्हे को आंगन में आने के लिए बुलावा भी चला गया था.

दूल्हा आने ही वाला था, तभी एक सजीधजी गाड़ी ममता के दरवाजे पर आ कर रुक गई, जिस में से दूल्हे के रूप में विनय निकला. उस ने वहां मौजूद लोगों से साफसाफ कह दिया, "ममता का असली दूल्हा मैं हूं. मैं ममता से कई सालों से प्यार करता हूं. ममता भी सिर्फ मुझ से प्यार करती है. उस की जबरन दूसरे से शादी कराई जा रही है. मैं यह कभी नहीं होने दूंगा."

यह सुन कर सभी लोग हैरान रह गए. ममता के पिता विनय से हाथ जोड़ कर बोले, "बेटा, हमारी इज्जत का सवाल है. तुम ऐसा बवाल मत करो."

विनय मानने के लिए तैयार नहीं था. वहां कुछ बरात वाले भी आ गए थे. विनय दरवाजे पर ही बैठ गया और बोला, "जब तक ममता को मेरे साथ विदा नहीं कर दोगे, तब तक मैं यहीं भूखाप्यासा बैठा रहूंगा."

इस मामले की पुलिस को खबर की गई. पहले तो पुलिस ने भी विनय को जबरन हटाने की कोशिश की, पर जब विनय अडिग रहा, तो पुलिस ने ममता से राय ली.

ममता ने कहा, "मैं विनय से प्यार करती हूं. मैं उस के बिना जिंदा नहीं रह सकूंगी."

पुलिस दारोगा ने विनय को आंगन में बुलाया और घर वालों से कहा, "आप लोग जानबूझ कर लड़की की जिंदगी नरक मत बनाइए. अच्छा यही रहेगा कि इस की शादी विनय से कर दीजिए."

ममता को आंगन में बैठा कर विनय से सिंदूरदान कराया गया और उस के साथ विदा कर दिया गया.

इधर बरातियों के बीच काफी उदासी छा गई. वे सब लौटने की तैयारी करने लगे थे. वे शर्म से पानीपानी हो रहे थे. सब यही सोच रहे थे कि गांव जाने के बाद क्या जवाब देंगे?

उसी बीच एक लड़की के पिता राघवेंद्र वहां पहुंचे और उन्होंने लड़के के पिता से कहा, "भाई साहब, एक बात बोलूं, बरात को बैरंग लौटते देख कर मुझे काफी बुरा लग रहा है. मेरी भी एक बेटी है, जो बीए पार्ट 2 में पढ़ती है. अगर पसंद आ जाए, तो आप उसे अपने घर की दुलहन बना सकते हैं. यह बगल का घर मेरा ही है."

लड़के के पिता ने हामी भर दी. उन्हें घर ले जा कर राघवेंद्र ने अपनी बेटी रंजना को दिखा दिया. वह काफी खूबसूरत थी.

कुछ ही देर में दूल्हे देवेंद्र को आंगन में बुलाया गया. सादे रस्मोरिवाज के साथ सिंदूरदान करवाया गया और नई दुलहन को ले कर बरात वापस लौट गई. ●

Mr. Cook®
Pressure Cookers
देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद..
60
United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

SULABH
BRONKO CURES
बच्चों के ब्राँकाइटिश न्यूमोनियाँ, दमा
दमफूली, हावा-डावा की अत्युत्तम औषधि।
आजमाइश कर देखें...
JHACTIONS HOMOEO PVT. LTD.
Ph.: 9973516445
www.jhactionshomoeo.com
सभी होमियोपैथी स्टोर्स पर उपलब्ध

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO. 1 BRAND INDIA 2014
Consumer Survey Report, MRG 2014

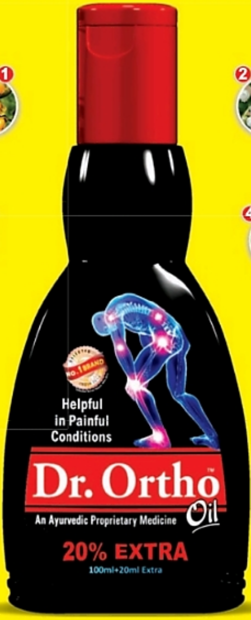

Helpful
in Painful
Conditions
Dr. Ortho™
Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

ज्योतिष्मती तेल
जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल
नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल
जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल
पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

कपूर तेल
विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल
जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

तिल तेल
मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

आखिरी भाग

महुआ चली गई

जीतेंद्र मोहन भटनागर

*पिछले अंक में आप ने पढ़ा था : जवान होती बेटी महुआ पर उस का बाप बांके अजीब सी निगाह रखता था. उस के ठेकेदार श्याम सुंदर ने महुआ से काम कराने के एवज में 5,000 रुपए दिए. महुआ का दिल तो घसीटा पर आया हुआ था. उसे पुरानी बातें याद आईं, जब वह अपनी सहेली फिरोजा के साथ खुश थी. फिरोजा ने उसे बुरका गिफ्ट करने का वादा किया था... **अब पढ़िए आगे...***

फिर जब बाजार में आफताब या घसीटा में से कोई टकरा जाता तो फिरोजा और महुआ अपनेअपने चाहने वाले को इशारे से करीब बुलातीं और कहीं सुनसान जगह पर मिलने का प्लान बनातीं.

इस तरह फिरोजा की आफताब से और महुआ की घसीटा से दोस्ती बढ़ी, पर प्यार की पेंगें जिस रफ्तार से बढ़नी चाहिए थीं, वैसी न बढ़ सकीं.

हामिद मियां को शायद भनक लग गई थी कि उन की बेटी फिरोजा का किसी लड़के के इश्क में गिरफ्तार होना शुरू हुआ है, इसलिए उन्होंने फिरोजा के घर से बाहर निकलने पर पूरी तरह रोक लगा दी थी.

उधर बांके ने भी महुआ पर सख्ती कर रखी थी, क्योंकि वह बस्ती के लड़कों की हरकतें देखता रहता था और जानता था कि वह एक पल ही होता है, जब इस उम्र का प्यार कुछ भी करा सकता है.

महुआ और फिरोजा के दिन ऐसे ही कट रहे थे. उन का मिलना भी कम हो गया था.

बांके रोज सुबह 8 बजे अपना टिफिन का डब्बा ले कर काम पर निकल जाता. उस के बाद चमकी भी झाड़ूबुहारी और पोंछे के काम के लिए उस बस्ती के बाहर कुछ दूर बने फ्लैटों में चली जाती.

उन के जाते ही महुआ अपनी झुग्गी की साफसफाई करना, जूठे बरतन मांजना, बाहर से बालटीबालटी पानी ला कर टंकियों में भरना, सारे घर के कपड़े धोना जैसे कामों में बिजी हो जाती.

4-5 महीने देखते ही देखते निकल गए, पर महुआ और फिरोजा उसी बस्ती में 10 घरों के फर्क से रहते हुए भी नहीं मिल पाईं.

आज कई महीनों के बाद महुआ ने मन में पक्का इरादा कर लिया कि अगर फिरोजा ज्यादा सख्ती के चलते घर से नहीं निकल पा रही है, तो वह तो उस से मिलने जा सकती है.

और आज उसे मौका भी मिल ही गया. बांके के काम पर निकल जाने के कुछ देर बाद जब चमकी भी काम पर चली गई, तो महुआ ने देखा कि सामने से जद्दन बी अपने शौहर के साथ रिकशे पर बैठ कर कहीं जा रही थीं.

महुआ ने उन्हें सलाम किया, फिर पूछ लिया, "कहां जा रही हैं बूआ?"

"फिरोजा के अब्बा को दवाखाना ले जा रही हूं. पता नहीं, कौन सी बीमारी लगा बैठे हैं. दिनभर घर में ही पड़े रहते हैं. तुम तो देखती ही हो कि फिरोजा तो कहीं आतीजाती नहीं, बस मुझे ही हर काम के लिए दौड़ना पड़ता है."

उन के दूर जाते ही महुआ ने घर में ताला लगाया और फिरोजा के पास पहुंच गई. फिरोजा की बेचैनी महुआ से छिपी नहीं. उसे ऐसा लगा कि फिरोजा किसी बात को ले कर मन ही मन घुट रही है.

महुआ ने पूछा, "तुम्हारे अब्बा ने ऐसा क्या कह दिया, जो तुम इतना परेशान हो रही हो?"

"महुआ, अब्बा का कहा मुझे कभी बुरा नहीं लगा, पर उन्होंने तो मेरी जिंदगी ही बरबाद कर दी और मुझे किसी लायक नहीं छोड़ा," कहते हुए उस ने महुआ को सबकुछ बता दिया.

अपनी कलाई और पैरों पर बांधी गई रस्सियों के निशान दिखाते हुए वह बोली, "अपनी हवस पूरी करने के लिए वे मेरे हाथपैर तक बांध देते थे और मुंह में कपड़ा ठूंस देते थे," इतना कह कर वह महुआ के सीने से चिपट कर रो पड़ी.

जब महुआ फिरोजा के घर से जाने लगी, तो फिरोजा एक रेशमी नया काला बुरका उसे देते हुए बोली, "यह मेरी अमानत तुम्हारे लिए."

फिरोजा की उस अमानत को अपने सीने से दबाए महुआ फिर आने का वादा कर के घर वापस चली गई. अभी घर के सारे काम बाकी पड़े थे, जिन्हें उसे समय से निबटाना था.

उस के कुछ महीनों बाद ही एक दिन जब महुआ सवेरे उठी तो देखा कि सामने वाले रेलवे ट्रैक पर लोगों की भीड़ जमा थी.

जब उस ने लोगों से पूछा, तो बस्ती के एक आदमी ने बताया, "हामिद मियां की बेटी ने रेल से कट कर अपनी जान दे दी..."

बस्ती वालों की शिनाख्त पर फिरोजा की लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया.

पुलिस ने फिरोजा के घर आ कर भी सूत्र जमा करने शुरू किए. उर्दू में लिखे सुसाइड नोट और पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने फिरोजा के अब्बा को गिरफ्तार कर लिया.

अखबार में छपी पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के आधार पर फिरोजा ने जब सुसाइड किया, उस समय वह पेट से थी.

उस के बाद कई रातों तक महुआ सो नहीं पाई. उसे यही अफसोस होता रहा कि सबकुछ जानते हुए भी वह अपनी पक्की सहेली फिरोजा से उस दिन के बाद से मिल नहीं पाई.

समय अपनी रफ्तार से भागता रहा. फिरोजा के हादसे के बाद महुआ ने अनुभव किया कि किसी के भी नजरों से ओझल हो जाने के बाद आसपास के माहौल में बस 2-3 दिन ही असर रहता है. उस के बाद यह दुनिया पहले की तरह ही सांसें लेने लगती है.

हामिद मियां के जेल जाने के बाद जद्दन बी भी झुग्गी बेच कर अपने भाई के साथ कहीं चली गईं. उन की झुग्गी को जिस ने खरीदा, वह बांके का पिता मुरारी था.

मुरारी का पूरा परिवार फलसब्जी बेच कर गुजारा करता था. मुरारी तो ठेले पर सब्जी सजा कर सवेरे 10 बजे निकल जाता था.

हालांकि मुरारी की फलों की पक्की दुकान थी, पर वह उस ने अपने दोनों लड़कों नवीन और घसीटा को सौंप रखी थी.

नवीन शादीशुदा था और बांके से 6 साल बड़ा था. दुकान पर नवीन ही बैठता था. दोपहर में जब वह खाना खाने घर आता, तो उस की पत्नी कुसुम ही दुकान की गद्दी संभालती थी.

घसीटा को कभी भी दुकान पर बैठने का मौका उस के भैयाभाभी देते ही नहीं थे और यह बात घसीटा को बहुत बुरी लगती थी. उसे तो चकरघिन्नी की तरह पूरे दिन इधर से उधर दौड़ाते ही रहते थे.

मंडी से सब्जी और फल खरीद कर लाने की जिम्मेदारी घसीटा की थी. अपनी साइकिल लिए वह हर तरह की दौड़भाग करता रहता.

इस तरह की जिंदगी से घसीटा ऊब चुका था. मां बचपन में ही गुजर गई थी और पिता बस बड़े भैया और भाभी के मुताबिक ही चलते.

घसीटा ने एक बार अपने पिता से कहा भी, "बापू, मुझे भी एक हाथ ठेला दिला दो. मैं भी सब्जी या फल ले कर

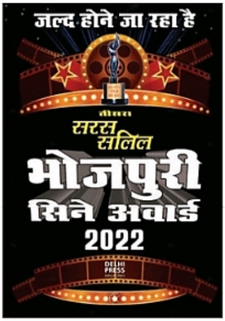

फेरी पर निकल जाया करूंगा."

इस पर मुरारी के कुछ बोलने से पहले उस की भाभी बोल पड़ी, "अलग से ठेला लगाने की क्या जरूरत है? इतनी बड़ी फलों की दुकान तुम्हारी ही तो है. उसी में मन लगाओ."

इस पर मुरारी बोल पड़ा, "तुम्हारी भाभी सही तो कह रही है, फिर तुम भी ठेला लगाओगे तो मंडी की दौड़भाग कौन करेगा?"

घसीटा ऐसे ही दिल मसोस कर रह जाता. उसे कहीं राहत मिलती तो महुआ के करीब पहुंच कर. एक वही थी, जिस का प्यार पा कर वह सबकुछ भूल जाता, इसलिए जब भी अपने घर से निकलता तो साइकिल की घंटी बजाता हुआ ही निकलता और महुआ के घर के सामने घंटी बजाने की रफ्तार तेज हो जाती.

एक दिन दूर से ही घंटी की आवाज सुन कर महुआ बाहरी दरवाजे पर खड़ी हो गई और उस से बोली, "अरे, तुम से एक जरूरी काम है. तुम अंदर आ जाओ."

महुआ उसे अपने कमरे में ले गई और पूछा, "क्या तुम मुझ से प्यार करते हो?"

"हां, बहुत ज्यादा... और तुम से ही शादी करना चाहता हूं, पर पता नहीं पिताजी और भैयाभाभी तैयार होंगे या नहीं."

"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?" जब महुआ ने पूछा, तो वह बोला, "अरे महुआ, मेरी भाभी बहुत तेज हैं. घर में उन की ही चलती है. मुझ से तो कई बार कह चुकी है कि तुम कहीं और न मुंह मार देना देवरजी, मैं तुम्हारी शादी अपनी छोटी बहन से ही करवाऊंगी, लेकिन मुझे उन की छोटी बहन बिलकुल पसंद नहीं है," कहतेकहते जब घसीटा चुप हुआ, तो महुआ बोली, "और इधर मेरा बाप मेरी शादी किसी से भी नहीं होने देगा, जबकि मैं तुम को ही अपना मान चुकी हूं."

"तो फिर...?" घसीटा ने चिंता जताई.

"हमें हर हाल में भाग कर शादी करनी होगी. बोलो, इस के लिए तुम तैयार हो?"

घसीटा सोच में पड़ गया. कुछ देर बाद वह बोला, "मान लो, हम भाग भी जाते हैं, तो जाएंगे कहां?"

"इतनी बड़ी दुनिया है, कहीं भी. फिर मैं घरों का काम कर के कमाऊंगी और तुम फल बेच कर कमाई करना. बस, यह सोच लो कि हमें इस दलदल से निकलना है," महुआ की बात में दम था.

"हमें इस गंदी बस्ती से दूर जाना है," इतना कह कर उस ने घसीटा को अपनी बांहों में भर लिया और उसे प्यार करने लगी.

घसीटा ने भी उसे अपने प्यार से भर दिया.

ऐसे ही घसीटा का महुआ से मिलनाजुलना होने लगा. हर बार महुआ का खाली घर ही काम आया.

अपने घर के करीब स्थायी रूप से घसीटा के आ कर बस जाने पर सब से ज्यादा कोई खुश था, तो वह थी महुआ. पर घसीटा के घर जा कर उस से मिल पाना इतना आसान नहीं था.

फिर उस की भाभी के बारे में सुन कर तो वह और भी नहीं जाना चाहती थी, इसलिए महुआ ने हिम्मत दिखाते हुए खुद आगे बढ़ कर यह रास्ता चुना था.

उस दलित बस्ती में अपनेअपने हिसाब से रेलवे ट्रैक के पास की जमीन पर दलितों ने झुग्गीझोंपड़ियां बना कर ऐसा तगड़ा कब्जा कर रखा था कि उन्हें अब हटाना मुश्किल था.

सब के राशनकार्ड बने हुए थे, वोटर आईकार्ड के साथसाथ अब तो आधारकार्ड भी बन गए थे. तकरीबन सभी झुग्गियों की छतों पर डिश एंटीना लगा दिख जाता था. बहुतों के पास मोबाइल फोन भी थे.

लाइन से बनी झुग्गियों से बाहर आ कर गिरने वाले गंदे पानी के लिए दूर तक एक पतली नाली बनी हुई थी, जो आगे जा कर रेलवे ट्रैक के बराबर बहने वाले गंदे, बदबूदार बहते नाले में मिल जाती थी.

नाले के सामने ही रेलवे की खाली, प्लास्टिक की पन्नियों वाले गंदे कूड़े से पटी हुई जमीन और उसी जमीन की उठान पर रेलवे का यह एक बना ट्रैक था, जहां से रोज ही कई रेलगाड़ियां गुजरा करती थीं.

पहले तो भोर होते ही बस्ती के सभी आदमीऔरत, लड़केलड़कियां, बूढ़ेबच्चे सभी उस रेलवे ट्रैक पर शौच के लिए बैठ जाते थे, पर इधर जब से दलित बस्ती के लिए शौचालय बन गए, तब से उस ट्रैक का इस्तेमाल बंद तो नहीं हुआ,

92
क्या शर्मा रहा है ?
दाद, खाज खुजली है?
हमें भी होती है
दाद, खाज, खुजली से तुरंत आराम
ZALIM LOTION
For Ringworm and Itches
जालिमलोशन
जालिमलोशन®
Fastest > Trusted > Tested
...पीढ़ियों से
मेडिकल स्टोर से तुरंत खरीदें
ANIL PUB.
Retailers may also buy online : www.zalimlotion.in ✉ zalimlotion1929@gmail.com

पर कम जरूर हो गया था.

चमकी को फंसा लाने के बाद से जब बांके पीछे खुले हिस्से और आगे बरामदे के साथ 2 कमरों वाली इस झुग्गी में आया था, तब सबकुछ कच्चा था और छत पर खपरैल था.

बाद में रेलवे ट्रैक के नजदीक होने का फायदा उठाते हुए और आसपास बनते फ्लैटों से चुराई गई सीमेंट और ईंटों से उस ने धीरेधीरे अपनी पक्की झुग्गी बना ली.

शराब पीने की बुरी लत के साथसाथ काम करने वाली औरतों पर हमेशा बांके की बुरी नीयत रहती थी और वह हमेशा उन्हें किसी भी तरह फंसाने की कोशिश में लगा रहता था.

आजकल उस की नजर बिंदा पर थी. गरीब बिंदा का पति मर चुका था और एक साल के बच्चे को ले कर वह काम पर आती थी.

चूंकि बांके के चरित्र से बद्री अच्छी तरह वाकिफ था, इसलिए उस ने नई लेबर होने के चलते बिंदा को अपने साथ लगा लिया था, जिस के चलते बद्री से लड़झगड़ कर वह घर चला आया था.

आते समय उस ने रास्ते में पड़ने वाले शराब के ठेके पर बैठ कर खूब शराब पी...

चूंकि बिंदा के प्रति बहुत गंदे खयाल उस के दिमाग में उमड़घुमड़ रहे थे और शराब पूरी तरह असर कर चुकी थी, इसलिए जब महुआ उस के सामने पड़ी तो उसे देख कर बांके ने अपने होशोहवास खो दिए.

यह तो अच्छा हुआ, जो श्याम सुंदर उसे बुलाने आ गया, वरना पता नहीं महुआ का क्या होता.

उस के जाने के बाद महुआ बहुत देर तक सोचविचार में खोई रही. क्या अपनी इज्जत गंवाने के बाद वह भी फिरोजा की तरह खुदकुशी कर लेती या फिर पिता को मार डालती?

उसे अपनी मां चमकी से तो अपने बचाव की कोई उम्मीद नहीं थी और अब जब उसे अपने पिता की गंदी नीयत का पता चल गया है, तो उसे जल्दी ही कोई फैसला लेना था.

एक घसीटा ही ऐसा है, जो उस के बारे में अच्छा सोचता है, उसे चाहता भी है, इसलिए उसे इस घर के माहौल से अपने को निकालना होगा.

दिनभर वह यही सब सोचती रही. 3 बजे जब मां आई, तो वह टैलीविजन देख रही थी.

मां ने आते ही रोज की तरह पूछा, "क्या करती रही दिनभर?"

उस का मन तो हुआ कि पिता की आज वाली हरकत वह मां को बता दे, पर वह जानती थी कि उस की मां उसी से कहेगी, 'तू क्यों उघड़े कपड़ों में उन के सामने गई? तुझे खुद पिता से बच कर रहना चाहिए.'

और अगर हिम्मत कर के वह अपने पति बांके से ऐसी हरकत पूछेगी, तो सिवा पिटने के उसे कुछ भी हासिल नहीं होगा, इसलिए उस ने रोज वाला ही जवाब दिया, "बस घर के काम निबटाती रह और रात के भोजन की तैयारी कर के रख दे."

आज बिंदा पर डोरे डालने की अपनी कामयाबी पर खुश होने के चलते बांके का मूड अच्छा था और आज वह दारू पी कर नहीं आया था, बल्कि ले कर आया था. साथ में पकापकाया मांस और रोटियां भी ले लाया था.

वह आते ही बोला, "आज तुम दोनों को खाना बनाने की फुरसत... लो, थैला पकड़ो और खाना लगाओ, सब मिल कर खाते हैं."

"लेकिन, मेरा पेट गड़बड़ है. मैं आज मांस नहीं खाऊंगी. मैं लौकी की सब्जी बना कर खाऊंगी," महुआ के मुंह से ऐसा सुन कर बांके के मुंह से गाली निकलनी शुरू हो गई, "बड़ी हो गई है, तो इस के नखरे नहीं मिलते. कहती है कि मांस नहीं खाऊंगी. कितने मन से इस के लिए मैं मांस लाया था..." कहते हुए वह उठ कर महुआ को पीटने के लिए लपका, तो चमकी उस के बचाव के लिए बीच में आ गई. बोली, "इस के पेट में बहुत दर्द है. इस के हिस्से का रख देंगे, कल खा लेगी... आप की बच्ची है."

'कल' शब्द सुन कर उसे याद आया कि कल से तो महुआ को ठेकेदार के घर ले कर जाना है.

"ठीक है, इस समय मैं इसे छोड़ता हूं, पर कल से इसे ठेकेदार के घर काम पर जाना है. कोई भी बहाना सवेरे मैं नहीं सुनूंगा... समझी."

"5,000 रुपए महीने पर उन्होंने इसे घर पर काम करने के लिए रख लिया है. सवेरे इसे 9 बजे पहुंच कर ठेकेदारनी के कहे मुताबिक काम निबटाने हैं. शाम 5 बजे तक इस की छुट्टी हो जाएगी. तुम इसे तैयार कर देना. कल यह मेरे साथ ही काम पर जाएगी."

"ठीक है, कल यह आप के साथ काम पर चली जाएगी और अपनी मालकिन को कोई शिकायत का मौका नहीं देगी," चमकी ने कहा.

महुआ ने चौके में पहुंच कर अपने लिए खाना बनाया और 4 रोटियां घसीटा के लिए भी सेंक के रख लीं. अपने और घसीटा के लिए सिंकी रोटियां और सब्जी, प्याज, नमक, हरी मिर्च वगैरह ले कर उस ने उन थैलों में उन्हें रख लिया, जिन में बांके मटन और रोटी लाया था.

आयुर्वेद से आयुष्मान

रतन्स आयुर्वेदिक समाधान

प्र. मेरे मित्र को आपकी सलाह से लाभ मिला है, मेरी भी एक समस्या है, मैं खाज-खुजली से ग्रस्त हूं, उपचार दें। -रोमेश, कोलकाता.

उ. उपरोक्त समस्या के लिए आप आयुर्वेदिक तत्वों से युक्त ***'एक्ज़ोलीन'*** मल्हम समस्या वाले स्थान पर दिन में दो बार नियमित रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

प्र. मेरी उम्र १७ वर्ष है। मुझे शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए कोई आयुर्वेदिक दवा बताएं। -संकेत कुमार, ग्वालियर.

उ. शरीर की पुष्टता के लिए आप आयुर्वेदिक औषधि तत्वों से युक्त ***'वेटलिफ्टर'*** मॉल्ट २-२ चम्मच सुबह-शाम एक गिलास दूध के साथ नियमित ३ माह सेवन कर सकते हैं। नाश्ते में अंकुरित अनाजों का समावेश करें।

प्र. मेरे चेहरे की त्वचा निस्तेज है, जिस वजह से मैं हीन भावना से ग्रस्त हूं। उपाय बताएं। -अर्चना, पुरी.

उ. आप रोज़ाना कच्चे दूध से अपना चेहरा साफ किया करें एवं मसालेदार पदार्थों का सेवन कम करें। इसके साथ ही हर्बल तत्वों से युक्त हर्बल ***'सुगंधा वर्णनिखार क्रीम'*** को दिन में दो बार हल्के हाथों से चेहरे पर नियमित रूप से लगा सकते हैं।

प्र. मेरा पुत्र पेशाब करके सोता है, फिर भी बिस्तर गीला करता है। -राज, इंदौर.

उ. उनकी समस्या हेतु आप उन्हें ***'बेडवेट'*** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार सेवन करवा सकते हैं। आवश्यकता महसूस हो तो मनोचिकित्सक की सलाह लें।

प्र. मुझे सिर के बालों को काला, घना, चमकदार व स्वस्थ बनाने का आयुर्वेदिक उपाय बताएं। -नवजीत कौर, पटियाला.

उ. आप आयुर्वेदिक ***'केश वरदान'*** हेयर रिवाइटलाइजर तेल एवं ***'सतरीठा'*** प्लस शैम्पू नियमित रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

प्र. मुझे शरीर में आकर्षण की कमी महसूस होती है, कृपया उपाय बताएं। -एक पाठिका, कांचीपुरम्.

उ. उपरोक्त समस्या के लिए आप ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर जैल से दिन में दो बार मालिश कर सकते हैं एवं ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर कैप्सूल्स दिन में तीन बार दूध के साथ तीन माह तक नियमित रूप से सेवन कर सकते हैं।

प्र. मेरी समस्या यह है कि, तुतलाकर बोलने के कारण सभी मेरा मज़ाक़ बनाते हैं। क्या करूं? -राजशेखर, नई दिल्ली.

उ. सबसे पहले अपना आत्म विश्वास बढ़ाएं। साथ ही समस्या के लिए आप ***'वॉईस'*** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार पानी के साथ नियमित ३ माह तक सेवन कर सकते हैं।

प्र. मेरा शारीरिक विकास औसत होने से मेरा आत्मविश्वास कम होता जा रहा है। उपचार बताएं। -अंशुमन, भिवानी.

उ. शारीरिक विकास हार्मोनल कांस्टीट्यूट पर भी निर्भर करता है। चाहें तो पाचन क्रिया ठीक कर ग्रंथियों को सक्रिय करने हेतु ***'हाईटॉप'*** कैप्सूल २-२ सुबह-शाम नियमित सेवन कर सकते हैं। सूर्य नमस्कार किया करें।

प्र. मेरी स्कीन पर ग्लो नहीं है स्कीन पर रूखापन व रफनेस है, मैं हमेशा फेशियल पर खर्चा नहीं कर सकती, उपाय बताएं। -रति, इलाहाबाद.

उ. फेशियल के लिए अधिक समय व खर्च को कम करने और रोज़ फेशियल जैसा ग्लो पाने के लिए बहुमूल्य जड़ी-बूटियों केसर, चंदन, ऐलोवेरा एवं कपूर के गुणों से युक्त ***'फेशिया' फेशियल बार*** अत्यंत ही उपयोगी है। रोजाना इस्तेमाल से स्कीन पर ग्लो आएगा।

उपरोक्त सलाह रोगियों के लक्षणों को ध्यान में रखकर दी गई है. दवाओं का प्रयोग वैद्यकीय मार्गदर्शन में करें.

ratan ayurvedic

Ratan's
सुडोल
बॉडी टोनर जैल
आयुर्वेदिक औषधि

HELPLINE
95166-16688

प्रमुख आयुर्वेदिक व मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध.
Buy online: www.ratanayurvedic.com

Ayurvedic
Ratan's
Sudol
Body Toner Gel
NEW XL PACK

उस ने कमरे के बाहर से ही बांके और चमकी को दारू पीते और मटन के साथ रोटियां तोड़ते मस्ती में देखा, तो धीरे से उस ने खाने की पोटली अपने साथ ले जाने वाले कपड़े के थैले में रख ली और अपने कमरे में आ कर लेट गई.

महुआ को नींद तो आनी ही नहीं थी, उसे तो 2 बजे गुजरने वाली ट्रेन का इंतजार था. वह जाने क्याक्या सोचते हुए करवटें बदलती रही.

बारबार घसीटा का साथ होना ही उस में हिम्मत भर रहा था. घसीटा ने ही उस के मन की सुन ली है.

घसीटा के शब्द उस के कानों में गूंजने लगे, 'जब भी भागना हो तो रात का समय चुनना. जब सब गहरी नींद में होते हैं. रात के 2 बजे जो ट्रेन रोज गुजरती है, उसी समय तुम निकलना...

'मैं चूंकि बाहरी बरामदे में ही सोता हूं, इसलिए मैं बाहर निकल आऊंगा और फिर हम भाग चलेंगे.'

'और अगर हम पकड़े गए तो... ?' तब अचानक महुआ पूछ बैठी थी.

इस पर घसीटा बोला, 'तब की तब देखी जाएगी. अपने पर भरोसा रख.'

इन्हीं सब बातों को याद करते हुए और दिल में घसीटा पर पूरा विश्वास करते हुए वह बिस्तर से उठी. बहुत हौले से पिताजी के कमरे में झांका. चमकी और बांके गहरी नींद में सो रहे थे.

वे दोनों चूंकि नशे में धुत्त थे, इसलिए नींद भी गहरी थी. उस ने अपने लिए 2 जोड़ी कपड़े उसी थैली में रख लिए, जिस में खाने की पोटली रखी थी.

ठेकेदार के दिए गए 5,000 रुपयों को उस ने पहनी हुई चोली में खोंसा, फिरोजा का दिया हुआ बुरका पहन कर रात के 2 बजे गुजरने वाली ट्रेन की आवाज के साथ ही वह धीरे से सांकल खोल कर झुग्गी से बाहर आ गई.

दरवाजे को धीरे से बंद कर वह घसीटा के घर की तरफ बढ़ चली. बुरका पहन कर वह जाने क्यों अपने को महफूज महसूस कर रही थी.

कुछ देर बाद महुआ घसीटा के साथ ऊपर रेलवे ट्रैक पर थी, जहां कोई पैसेंजर ट्रेन हरे सिग्नल के इंतजार में मानो उन के लिए ही खड़ी थी. वे दोनों एक डब्बे में चढ़ गए. उन के चढ़ते ही ट्रेन एक दिशा में धीरे से आगे बढ़ गई.

उस डब्बे के गलियारे में ही दोनों साथ लाई चादर बिछा कर बैठ गए. महुआ ने दोनों हथेलियों में अपनी तरफ वाली घसीटा की बाजू को कस कर पकड़ लिया और उस का सिर अपनेआप ही उस के कंधे पर टिक गया. ट्रेन ने अपनी रफ्तार पकड़ ली थी. ●

जानकारी

सैक्स के दौरान गहने और मेकअप

संवाददाता

बिहार के एक छोटे से गांव के रहने वाले नौजवान पूरण की शादी नजदीक के गांव की फुलझड़ी से हुई थी. पूरण 25 साल का था और फुलझड़ी 21 साल की. वे दोनों देखने में ठीकठाक थे, पर देह के गठीले और साफसुथरे थे.

शादी की रस्में पूरी होने के बाद पूरण बरात अपने घर ले आया. दुलहन का खूब स्वागत हुआ और फिर आई सुहागरात. साधारण से कमरे के आम से बिस्तर पर छुईमुई सी बैठी फुलझड़ी की आने वाले पलों के बारे में सोच कर सांसें ऊपरनीचे हो रही थीं कि पूरण वहां आ गया.

पूरण अपनी सुहागरात को ले कर उतावला था और यह उतावलापन बिस्तर पर दिखा भी. पर पूरण को फुलझड़ी में एक बात बहुत अच्छी लगी कि उस ने उस रात देह मिलन के समय कुछ गहने जानबूझ कर नहीं उतारे थे. पूरण ने कहा भी कि कमरे के बाहर गहनों का शोर होगा, पर फुलझड़ी ने कहा कि वह आज उस की मान ले.

सुहागरात पर पूरण और फुलझड़ी की देह से देह, सांस से सांस और मन से मन मिला था, पर इस मिलन में फुलझड़ी की देह पर सजे कुछ गहनों ने जो सोने पर सुहागा किया था, वह पूरण को सारी जिंदगी याद रहेगा.

दरअसल, उस रात फुलझड़ी ने अपनी पाजेब, चूड़ियां और तगड़ी नहीं उतारी थीं. इतना ही नहीं, उस ने उस रात पूरण से अपनी आंखों में काजल और पैरों पर महावर लगवाया था.

पहले तो पूरण को यह सब अटपटा लगा, पर जब वह फुलझड़ी की देह की गहराइयों में उतरा, तो उसे बिलकुल भी अनजानापन महसूस नहीं हुआ, जबकि पाजेब, तगड़ी के घुंघरू और चूड़ियों की आवाज ने इस मिलन को यादगार बना दिया था. उस रात पूरण और फुलझड़ी ने अपनी सैक्स लाइफ का भरपूर लुत्फ उठाया था.

अगले दिन सुबहसवेरे पूरण ने जब अलसाई फुलझड़ी से अपने गहने न उतारने की बात और खुद को पति से सजवाने का राज जानना चाहा, तो उस ने शरमा कर कहा, "मेरी एक सहेली ने इस बारे में बताया था. वह बोली थी कि पतिपत्नी के मिलन में पत्नी का सिंगार और कुछ छोटे गहने उस के बदन को और भी मादक बना देते हैं.

"शरीर को साफसुथरा तो सभी रख लेते हैं, पर अगर देह से देह के मिलन में इस बात का खयाल रखा जाए तो पतिपत्नी का मजा दोहरा हो जाता है."

बेशक, फुलझड़ी गांव की नई ब्याहता है, पर जहां तक सैक्स संबंधों में पत्नी के सिंगार की बात है, तो वह एकदम सही है.

आप सोच कर देखिए कि आप की जीवनसाथी उसी तरह सजधज कर बिस्तर पर आती है, जैसी फुलझड़ी अपनी सुहागरात पर पूरण के सामने आई थी.

पैरों में बजती पाजेब, कमर को कसती तगड़ी में बंधे छोटेछोटे घुंघरू और हाथ में चंद खनखनाती चूड़ियां बिस्तर पर न भूलने वाला माहौल बनाने के लिए काफी हैं. उस पर पत्नी चाहे कि पति अपने हाथों से उस की आंखों में काजल लगाए, चाहे जैसा भी, पैरों में लाल महावर से चंद लकीरें खींच दे...

वाह... यही तो प्यार की वह चुहलबाजी होती है, जिसे इंगलिश भाषा में 'फोरप्ले' कहा जाता है. मिलन से पहले एकदूसरे के शरीर को तैयार करना. इस में चूमने, सहलाने, नाजुक अंगों को छेड़ने के साथसाथ औरत का सिंगार बहुत खास रोल अदा करता है.

अगर कोई शक है तो आप भी पूरण और फुलझड़ी वाला तरीका आजमा कर देखें. 'फोरप्ल' का यह देशी सूत्र आप की कामकला को यकीनन नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा.

औरत की कमर से बंधी तगड़ी को पकड़ कर उस की देह को टटोलिए, फिर देखिए कि उस के बजते घुंघरुओं से आप की जिंदगी के सारे सुर एकसाथ लग जाएंगे. ●

असली जिंदगी में भी ‘थलाइवा’ हैं रजनीकांत

सुनील शर्मा

हाल ही में दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार हीरो रजनीकांत 2 बातों से सुर्खियों में रहे. पहली बात तो यह कि अचानक चक्कर आ जाने से उन्हें 28 अक्तूबर, 2021 को चेन्नई के एक अस्पताल में भरती होना पड़ा था, जहां उन का ब्रेन का एक छोटा सा आपरेशन हुआ था.

दूसरी बात यह थी कि रजनीकांत को 67वें नैशनल फिल्म अवार्ड के तहत 25 अक्तूबर, 2021 को ‘दादा साहब फाल्के अवार्ड’ से नवाजा गया था. यह अवार्ड किसी भी कलाकार के लिए हासिल करना बड़ी इज्जत की बात है और जिस तरह से रजनीकांत ने फिल्मों के जरीए आम जनता का इतने सालों तक मनोरंजन किया है, वे इस अवार्ड के दावेदार और हकदार तो बनते हैं.

पर रजनीकांत ने इस समारोह में अपनी कही गई एक बात से उस समय चार चांद लगा दिए, जब उन्होंने अपना यह कीमती अवार्ड उस इनसान को समर्पित किया, जिस के बारे में किसी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा.

रजनीकांत का वह जिगरी दोस्त कोई बड़ी या अमीर शख्सीयत नहीं है, उन के परिवार का कोई सदस्य भी नहीं है, बल्कि उस का नाम राज बहादुर है, जो उन का उस जमाने का दोस्त है, जब वे बस में बतौर कंडक्टर काम करते थे.

जैसा कि रजनीकांत के चाहने वाले जानते हैं कि फिल्मों में आने से पहले वे आम बस कंडक्टर थे और तब उन का नाम शिवाजी राव गायकवाड़ था और उन्हें तमिल भाषा भी बहुत अच्छे तरीके से नहीं आती थी, जबकि राज बहादुर तब बस ड्राइवर थे. यह दोस्ती 50 साल पुरानी है और इस की धार आज भी कुंद नहीं हुई है.

अब राज बहादुर बैंगलुरु के चमराजपेट में रहते हैं और उन्होंने कभी शिवाजी राव गायकवाड़ को रजनीकांत बनने के लिए बढ़ावा दिया था. इतना ही नहीं, उन्होंने रजनीकांत को तमिल भाषा धड़ल्ले से बोलना सिखाया था.

रजनीकांत को यह अवार्ड मिलने के बाद राज बहादुर ने एक मीडिया हाउस को बताया, “मैं उन से साल 1970 में तब मिला था, जब उन्होंने बस कंडक्टर के तौर पर और मैं ने ड्राइवर के तौर पर नौकरी जौयन की थी. हमारे ट्रांसपोर्ट स्टाफ में वे सब से अच्छे ऐक्टर थे. जब भी महकमे का कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था, तब रजनीकांत स्टेज पर कार्यक्रम देते थे. ड्यूटी खत्म करने के बाद भी वे अलगअलग नाटकों में काम किया करते थे.

“मैं ने उन्हें चेन्नई जा कर ऐक्टिंग का कोर्स जौयन करने के लिए कहा था. 2 साल का ऐक्टिंग का कोर्स पूरा करने के बाद उस संस्थान ने एक कार्यक्रम कराया था, जिस में रजनीकांत ने ऐक्टिंग की थी. फिल्म निर्माता के. बालाचंद्रन उस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे. वे रजनीकांत के पास आए और कहा, ‘सुनो लड़के, तमिल सीख लो’.

“रजनीकांत मेरे पास आए और उन्होंने यह बात मुझे बताई. के. बालाचंद्रन ने इस के अलावा और कुछ नहीं कहा था, उन्होंने सिर्फ कहा था कि तमिल सीख लो.

“मैं ने रजनीकांत से कहा कि वह चिंता न करे. मैं ने उस दिन से उसे मुझ से सिर्फ तमिल में बात करने को कहा और इस के बाद जो हुआ वह इतिहास बन गया.”

राज बहादुर और रजनीकांत

रजनीकांत भी अपने दोस्त के किए गए कामों को नहीं भूले हैं. उन्होंने खुद कई बार बताया है कि राज बहादुर को तब तनख्वाह के रूप में 400 रुपए मिलते थे, जब उन्होंने रजनीकांत को चेन्नई जा कर वहां ऐक्टिंग स्कूल में दाखिला लेने पर जोर दिया, तो उन्हें वहां खाली हाथ नहीं भेजा था. तब वे रजनीकांत को हर महीने अपनी तनख्वाह का आधा हिस्सा यानी 200 रुपए भेजते थे.

हालांकि राज बहादुर अब नौकरी से रिटायर हो गए हैं और एक आम जिंदगी जी रहे हैं, पर रजनीकांत इस दोस्ती को आज तक नहीं भूले हैं. वे कभी भी उन के घर में आ जाते हैं. यही वजह है कि राज बहादुर ने उस घर में रजनीकांत के लिए एक कमरा रिजर्व रख छोड़ा है.

राज बहादुर बताते हैं, “हम नहीं जानते कि वे कब आ कर हमारे दरवाजे की घंटी बजा देंगे. सो, उन के लिए हम कमरा हमेशा तैयार रखते हैं.”

यह एक साधारण सा छोटा कमरा है, जिस में एक चारपाई लगी है और बमुश्किल इस में एक और इनसान नीचे जमीन पर बिस्तर लगा कर सो सकता है. जब भी रजनीकांत यहां आते हैं, तब ये दोनों दोस्त इस कमरे में बंद हो जाते हैं और घंटों बातें करते हैं. राज बहादुर चारपाई पर सोते हैं, जबकि रजनीकांत जमीन पर लगे बिस्तर पर लेट जाते हैं.

राज बहादुर ने बताया, “वे जब हमारे पास आते हैं, तो मेरे लिए दोस्त शिवाजी ही होते हैं. वे सुपरस्टार नहीं होते, जिसे दुनिया जानती है. उन्हें कन्नड़ और बैंगलुरु काफी पसंद हैं. वे उस समय से थोड़ा भी नहीं बदले हैं.”

हैरत की बात तो यह है कि रजनीकांत इस तरह अपने दोस्त से मिलने आते हैं कि पड़ोसियों को भी भनक तक नहीं लगती है कि रजनीकांत अपने दोस्त के घर रह कर गए हैं.

शिवाजी राव गायकवाड़ उर्फ रजनीकांत बस नंबर 10ए के कंडक्टर थे, जो मैजेस्टिक से श्रीनगर के बीच चलती थी. तब वे हनुमंतनगर में रहते थे, जबकि राज बहादुर चामराजपेट में. उस समय भी रजनीकांत का अपना खास स्टाइल था. वे बस के मुसाफिरों को सिक्का उछाल कर देते थे और सफर के दौरान उन का मनोरंजन करते थे.

इस तरह की दोस्ती फिल्मों में बहुत दिखाई जाती है, पर असल जिंदगी में इसे निभाना लोहे के चने चबाने जैसा है. अगर रजनीकांत अपना अवार्ड राज बहादुर को समर्पित नहीं करते तो शायद दुनिया को कभी पता ही नहीं चलता कि राज बहादुर नाम के एक शख्स ने अपना पैसा लगा कर उस इनसान की जिंदगी बनाई है, जिसे लोग आज ‘थलाइवा’ कह कर इज्जत देते हैं. वह इनसान, जो सिनेमाघरों की बड़ी स्क्रीन पर ऐंट्री मारता है, तो लोग खुशी के मारे जेब के सिक्के सफेद परदे पर उछाल देते हैं.

‘थलाइवा’ का मतलब ‘बौस’ या ‘लीडर’ होता है. भले ही रजनीकांत आज भारत में फिल्म जगत के ‘बौस’ हैं, पर राज बहादुर उन्हें बनाने वाले ‘बिग बौस’ हैं, जिन्होंने अपनी दोस्ती का फर्ज इस तरह अदा किया, जो हर किसी के बस की बात नहीं है. ●

उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू से ‘दादा साहब फाल्के अवार्ड’ लेते रजनीकांत

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX™

Advanced Formula For
Strong Immunity

कैप्सूल, सिरप, ओरल ड्राप्स एवं पाउडर
Multivitamin, Multiminerals & Antioxidants

200 ml
Multivitamin, Multimineral & Antioxidant Syrup
MULTIPREX Syrup
MULTIPREX
Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for Strong Immunity
ZEE DRUGS

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और
मिनरल की कमी को पूरा कर रोगो से बचाए

ZEE LABORATORIES LTD.

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2021-23/U(C) 163/2021-23 Saras Salil (Hindi) November-II
J.P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20, Published on 1/11/2021 Pgs.32

REVITAL H™
SUN PHARMA
रिवाइटल एच के साथ
पाइए नई एनर्जी बस 21# दिनों में
21 दिन
मनी बैक चैलेंज#
भारत का नं. 1 हेल्थ फूड सप्लीमेंट*
REVITAL H™
For Daily Health
Ginseng
Minerals
Vitamins
10 Caps
30 Capsules
रहो चार्ज्ड

*स्रोत: IQVIA*TSA DATA MAT सितंबर 20. रिवाइटल एच ओरल सॉलिड फूड सप्लीमेंट श्रेणी में नं. 1 है.
#रिवाइटल एच पर 2019 में किए गए स्वतंत्र अध्ययन पर आधारित. नियम और शर्तों की विस्तृत जानकारी के लिए कृपया विज़िट करें:https://www.facebook.com/MyRevitalH